ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

स्वामी दयानन्द सरस्वती

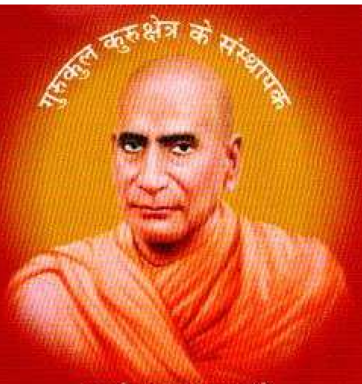

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

श्रावण, वि० स० 2081 ● कलियुगाब्द 5124 ● वर्ष : 11 ● अंक :07 ● जुलाई 2024

गुरुकुल में सम्पन्न हुए सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के राष्ट्रीय शिविर में

मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन जे.बी.एम. ग्रुप

को सम्मानित करते हुए गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, प्राचार्य सूबे प्रताप तथा व्यवस्थापक रामनिवास आर्य

साथ में है सार्वदेशिक आर्य वीर दल न्यास के अध्यक्ष स्वामी डॉ० देवव्रत जी सरस्वती एवं पद्मश्री आर्य विदूषी आचार्या डॉ० सुकामा जी

स्वामित्व : AN ISO 9001:2015 CERTIFIED INSTITUTE

गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा 136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

No.1 Residential School Of Haryana By Education World

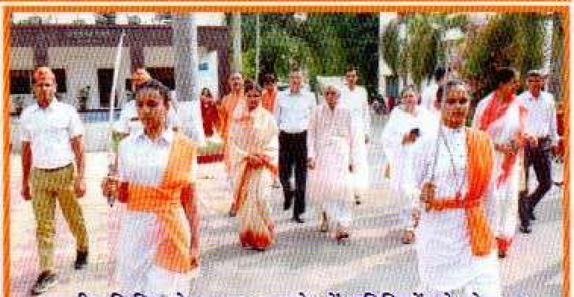

राष्ट्रीय शिविर के समापन समारोह में अतिथियों को स्टेज पर ले जाते हुए आर्य वीरांगनाएं

आर्य वीरांगनाओं द्वारा शानदार प्रदर्शन की झलकियाँ

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

ESTD. 1912
ISO 9001-2015

अनुक्रमणिका

'सम्पादक परिवार

संरक्षक : आचार्य देवव्रत जी
(राज्यपाल, गुजरात)
मुख्य संपादक : राजकुमार गर्ग
मार्गदर्शक : दिलावर सिंह
प्रबंध-संपादक : सूबे प्रताप
सह-संपादक : आ. सत्यप्रकाश
राजीव कुमार
कानूनी सलाहकारः राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकारः अनिल कुमार
व्यवस्थापक : राजीव कुमार
वितरण व्यवस्था : जयपाल आर्य
: जसविन्द्र आर्य
: अशोक कुमार

आवश्यक सूचनाएं

1. *'गुरुकुल दर्शन' मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।*
2. *पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 99960-26362 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया की हमें अपेक्षा रहेगी।*

–संपादक

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : राष्ट्रीय और प्रान्तीय शिविरों का आयोजन.. राजकुमार गर्ग	02
2.	परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए अग्रसर हों बेटियाँ –आचार्यश्री	03
3.	हरी खाद का उत्तम विकल्प है 'ढैंचा' ... रामनिवास आर्य	04
4.	करुणा से खत्म होगा क्रोध... आचार्य सत्यप्रकाश	05
5.	यूरिया, नाइट्रोजन का प्रचार नहीं, नए बीजों का निर्माण हों–आचार्यश्री	06
6.	चाँदपुर मेले की ऐतिहासिक घटना... शिवम् शास्त्री	08
7.	शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान जरूरी– स्वामी डॉ0 देवव्रत सरस्वती	09
8.	सबसे उत्तम है मटके का पानी... डॉ0 देव आनन्द	11
9	प्रान्तीय शिविर में 600 युवाओं का हुआ यज्ञोपवीत संस्कार	12
10.	वेदों में अलंकार... आचार्य दयाशंकर	13
11.	बुजुर्गों का सम्मान करें... श्रीगोपाल बाहेती	15
12.	संस्कृत और संस्कृति को संजोते गाँव... रामबीर शास्त्री	17
13.	पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा 'पॉलिथीन'... राहुल आर्य	18
14.	परम् हितैषी परमात्मा... मनमोहन कुमार आर्य	20
15.	ये कैसा विकास ?... जसविन्द्र आर्य	22
16.	गुरुकुल पहुंची कृषि मंत्रालय और जर्मन अधिकारियों की टीम	23
17.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

संपादकीय

राष्ट्रीय और प्रान्तीय शिविरों का आयोजन

राजकुमार गर्ग

वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्र-निर्माण और युवाओं के चरित्र व जीवन-निर्माण के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण संगठन आर्य समाज है। **युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** द्वारा श्रेष्ठ लोगों के संगठन की स्थापना 1875 में मुंबई में की गई थी। यदि युवाओं को सही दिशा देकर समाज और राष्ट्र की उन्नति कोई कर सकता है तो वह एकमात्र आर्यसमाज है। आर्यसमाज केवल वैदिक ज्ञान और वेदवाणी को मानता है और उसी के आधार पर समाज से पाखण्ड और अज्ञानता के अंधकार को मिटाने के लिए प्रयारसत है। वैदिक ज्ञान को ग्रहण करके ही श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों ने समस्त मानवजाति का कल्याण व उद्धार किया और वैदिक परम्परा को आगे बढ़ाया। **समाज** में बढ़ते अंधविश्वास, पाखण्ड, अज्ञानता को मिटाने के लिए पुन: लोगों को वेदों के मार्ग पर लौटना होगा।

समाज और राष्ट्र निर्माण की इस दिशा में महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। हमारे घरों से गायब हुए संस्कारों, गिरते हुए मानवीय मूल्यों और टूटती परम्पराओं को संजोने के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र वचनबद्ध है। साथ ही समाज में फैली नशाखोरी, कन्या भ्रूण-हत्या, भेदभाव, जातिवाद, क्षेत्रवाद, दहेज-हत्या, गुरुड़म जैसी कुरीतियों को समाप्त करने तथा आपसी भाईचारे को मजबूत करने के लिए, नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बनाने और युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावना पैदा करने का कार्य कर रहा है।

इसी पुनीत उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 1 से 05 जून तक प्रान्तीय आर्यवीर जीवन निर्माण शिविर तथा 16 से 25 तक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर लगाया गया। आर्यवीरों के प्रान्तीय शिविर में लगभग **400 आर्यवीरों** ने योगासन, जूड़ो-कराटे, लाठी चलाना, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, भूमि नमस्कार, सूर्य नमस्कार आादि प्रशिक्षण लिया। उसके पश्चात् सार्वदेशिक आर्य वीर दल न्यास के अध्यक्ष स्वामी डॉ0 देवव्रत जी सरस्वती के मार्गदर्शन में 16 से 25 जून तक आर्य वीरांगनाओं का राष्ट्रीय शिविर लगा जिसमें **देश के 10 प्रदेशों से 400 आर्य वीरांगनाओं** ने शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इन शिविरों में शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ युवाओं को उनके जीवनोपयोगी महत्त्वपूर्ण जानकारी भी दी गई। उनके चरित्र निर्माण में सहायक विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई और आर्य विद्वानों द्वारा उनकी शंकाओं का भी निवारण किया गया। इन शिविरों के माध्यम से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अनेक शिक्षक तथा शिक्षिकाएं तैयार की गई जो गांव-गांव में युवाओं को वैदिक सभ्यता-संस्कृति का संदेश देने के साथ-साथ उन्हें योगासन, हवन, सन्ध्या, प्राणायाम करने के लिए प्रेरित करेंगी।

निश्चित तौर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित इन आर्यवीर/वीरांगना राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविरों से समाज में एक जागृति आएगी और समाज में फैली बुराई व कुरीतियों का दमन होगा। इन शिविरों में आए युवा अपने घरों, मोहल्लों व आसपास के क्षेत्रों में फैली बुराइयों को समाप्त करने में अहम भूमिका अदा करेंगे साथ ही अज्ञानतावश जो लोग पाखण्ड व आडम्बरों के जाल में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं, उन्हें सच्चाई का आइना दिखाकर सद्मार्ग पर लाएंगें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा और गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संयुक्त तत्वाधान में सम्पन्न हुए इन शिविरों में युवाओं को समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए प्रेरणा दी गई। आर्य वीरांगना दल के राष्ट्रीय शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका बहन व्रतिका आर्या के नेतृत्व में हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, तमिलनाडू, दिल्ली आदि प्रदेशों की लगभग 400 आर्य वीरांगनाओं ने भीषण गर्मी में कड़ी तप-साधना की और शिविर समापन पर वैदिक संस्कृति और आर्य समाज के सिद्धान्तों का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करने का प्रण लिया। इन शिविरों के सफल आयोजन पर समस्त वेद प्रचार विभाग एवं गुरुकुल परिवार को बधाई देता हूँ और परम पिता परमेश्वर से कामना करता हूँ कि जिस उद्देश्य से इन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, उसमें सफलता मिलें। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो, युवा वर्ग में बढ़ते अपराधों व नशाखोरी पर अंकुश लगे तथा वेदों के ज्ञान को प्राप्त कर देश को फिर से विश्वगुरु बनायें।

– राजकुमार गर्ग

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के राष्ट्रीय शिविर के समापन पर बोले महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत

परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए अग्रसर हों बेटियाँ

आचार्यश्री ने कहा-प्रत्येक क्षेत्र में बेटियों ने नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं, गुजरात के विश्वविद्यालयों में प्रथम 100 क्रमांक में 80 बेटियां होती हैं, नौ राज्यों की 400 आर्य वीरांगनाओं ने शिविर में लिया प्रशिक्षण

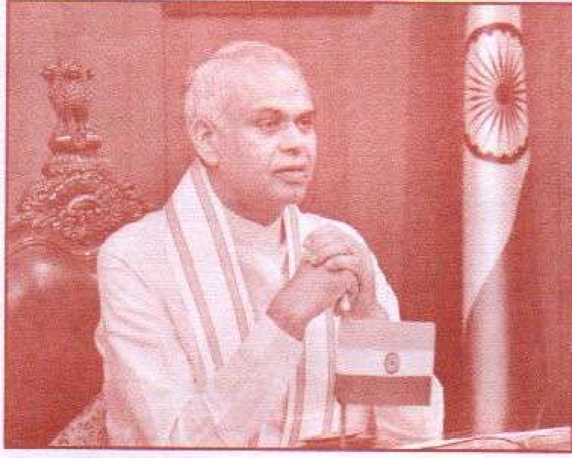

अहमदाबाद/कुरुक्षेत्र-राज्यपालश्री आचार्य देवव्रतजी ने कहा कि बेटियां घर के वातावरण को संस्कारित करके परिवार, समाज और राष्ट्र-निर्माण के लिए अग्रसर हों। उन्होंने कहा कि पुरुषों की तुलना में माताएं-बहन-बेटियां विशेष जिम्मेदारी, मनोयोग और आत्मीयता से अपना कर्तव्य निभाती हैं। भारत देश आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में अग्रसर है तब, नैतिक मूल्यों के जतन और संवर्धन के लिए भी उनको आगे आना चाहिये।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के राष्ट्रीय शिविर का आयोजन हरियाणा के गुरुकुल कुरुक्षेत्र में हुआ। दस दिवसीय शिविर में हरियाणा के साथ ही पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु और छतीसगढ़ सहित नौ राज्यों की 400 आर्य वीरांगनाओं ने भाग लिया। इस राष्ट्रीय शिविर के समापन समारोह में राजभवन-गांधीनगर से वर्च्युअली शामिल हुए राज्यपालश्री आचार्य देवव्रतजी ने कहा कि साम्प्रत वातावरण में महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के चिंतन और आर्य समाज की विचारधारा की प्रबल आवश्यकता है। आर्य वीरांगना दल की बेटियों से उन्होंने देश की युवापीढ़ी के निर्माण में सामाजिक जागृति में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की।

एक समय ऐसा था जब बहन-बेटियों को यज्ञ-वेदाभ्यास का अधिकार तक नहीं था परंतु समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी जैसे महापुरुषों के प्रयासों से परिस्थितियां बदल गई। आज तो चित्र सम्पूर्णतया बदल गया है, इसका उल्लेख करते हुए राज्यपालश्री ने कहा कि 'आज एक भी क्षेत्र ऐसा नहीं है कि जहां बहन-बेटियों ने नये कीर्तिमान स्थापित ना किए हों। गुजरात के विश्वविद्यालयों के दीक्षांत समारोहों में मैं देखता हूँ कि प्रथम 100 क्रमांक में 80 बेटियां होती हैं।' उन्होंने बेटियों को मन से दृढ़ और तन से सक्षम बनने का आह्वान किया।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के राष्ट्रीय शिविर के दौरान मिले शिक्षण और प्रशिक्षण को जीवन की पूंजी बनाने की प्रेरणा देते हुए राज्यपालश्री ने कहा कि भारतीय मूल्यों और वेदों में विश्व कल्याण का चिंतन है। शिविर में से आत्मसात किए गए विचारों का विस्तार करके उनका उपयोग समाज को जोड़ने में करें और राष्ट्र की एकता बढ़ाने में भी बेटियां योगदान दें। राज्यपालश्री ने संस्कार सिंचन के लिए इस शिविर में भाग लेने के लिए बेटियों और उनके माता-पिता को अभिनन्दन दिया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आयोजित इस शिविर में आर्य वीर दल न्यास के अध्यक्ष स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वतीजी के मार्गदर्शन में अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा आर्य वीरांगनाओं को शारीरिक, बौद्धिक शिक्षण के साथ ही आत्मरक्षा का प्रशिक्षण भी दिया गया। वीरांगनाओं को व्यायाम, आसन, प्राणायाम, षट्कर्म, ध्यान, संध्या और यज्ञ के साथ ही सैनिक शिक्षा और प्राथमिक चिकित्सा का भी प्रशिक्षण दिया गया। समापन समारोह में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका श्रीमती व्रतिका आर्या ने स्वागत सम्बोधन किया। अंत में स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती जी ने आभार विधि की। इस अवसर पर गुरुकुल के प्राचार्य सूबे प्रताप, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, वेद प्रचार विभाग के वरिष्ठ भजनोपदेशक जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य, मनीराम आर्य आदि अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

हरी खाद का उत्तम विकल्प है - ढैंचा

रामनिवास आर्य

आमतौर पर ढैंचा को किसान सामान्य फसल के रूप में देखते हैं मगर यह आपकी खेतों के लिए कितना उपयोगी है, इसकी जानकारी शायद आपको नहीं है। वास्तव में ढैंचा खेतों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है,यह भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में तो सहायक है ही अपितु इसके प्रयोग से बंजर भूमि भी थोड़े समय पश्चात् उपजाऊ बन जाती है।

हरियाणा, पंजाब सहित देश के लगभग सभी क्षेत्रों में किसान भाई लगातार कई वर्षो से अपने खेतों में रासायनिक खाद-उर्वरक तथा अन्य जहरीले रसायनों का प्रयोग करके खेती कर रहे है जिसके परिणाम स्वरूप हमारी भूमि में ऑर्गेनिक कार्बन, मित्र सूक्ष्म जीव, मित्र फंगस, आवश्यक पोषक तत्वों की कमी होती जा रही है। भूमि की भौतिक व रासायनिक संरचना बिगड़ चुकी है, जमीन का पोलापन कठोरता में बदल रहा है। भूमि में लवणीयता तथा क्षारीयता बढ़ रही है। गोबर की विभिन्न तरह की खादों व अन्य जैविक खादों का प्रयोग लगभग न के बराबर हो रहा है अथवा बंद कर दिया गया है जिस कारण हमारी भूमि की उर्वरा शक्ति लगातार क्षीण होती जा रही है। ऐसे में फसलों का उत्पादन स्थिर हो गया है अथवा कम होता जा रहा है। अगर यही हाल रहा तो एक दिन हमारी खेती बंजर हो सकती है। यदि हमें अपने खेतों को बंजर होने से बचाना है तथा अपनी अगली पीढ़ी के लिए कृषि क्षेत्र में एक अच्छा भविष्य देना है, तो हमें अपने खेतों में नियमित गोबर से बनी विभिन्न तरह की खादों व हरी खादों का प्रयोग करना होगा।

हरी खाद -हरी खाद सबसे अच्छा , सरल, कम लागत वाला एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है। इसके प्रयोग से भूमि में देशी केंचुओं की संख्या में वृद्धि होती है तथा फसलों के लिए आवश्यक सभी मुख्य व सूक्ष्म पोषक तत्वों, आर्गेनिक कार्बन, एंजाइम्स- विटामिन्स-हार्मोन्स, विभिन्न मित्र बैक्टेरिया व मित्र फंगस, आर्गेनिक एसिड्स आदि में वृद्धि होती है तथा हमारी भूमि उपजाऊ बनती है।

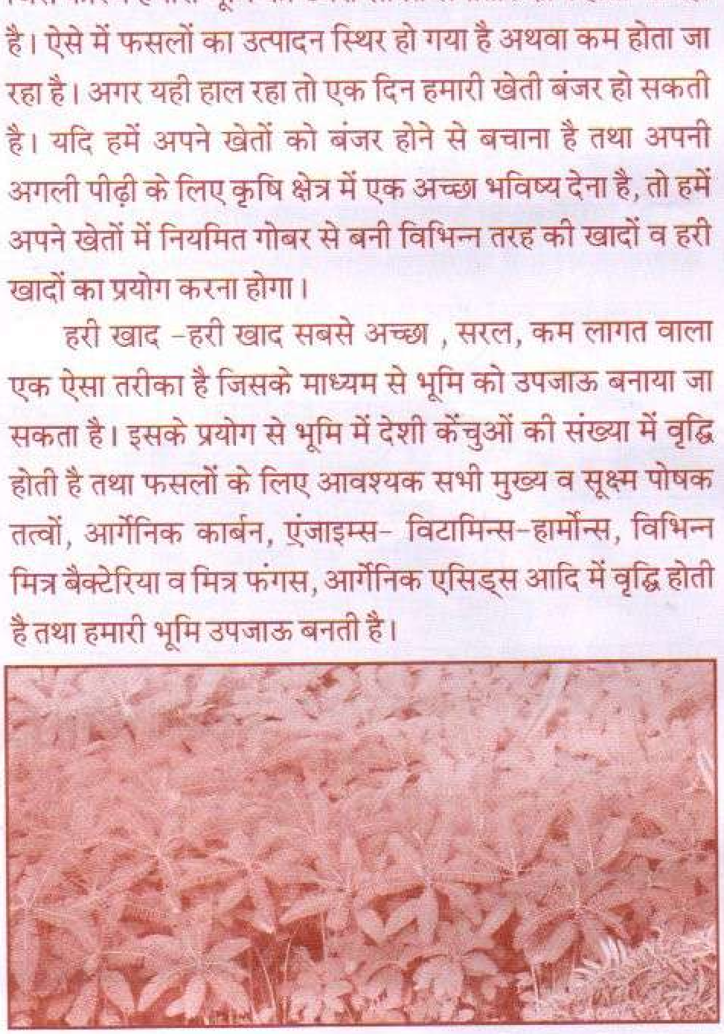

इसके लिए हमे गेंहू की कटाई के बाद पानी की व्यवस्था वाले खेतों में अप्रैल या मई माह में तथा सूखे क्षेत्रो में मानसून आने पर हरी खाद की बुआई करनी चाहिए। हरी खाद के लिए तेजी से बढ़ने वाली दलहनी फसलें जैसे-ढेंचा, सनई, लोबिया, ग्वार, मूंग उड़द आदि की बुआई कर सकते है। मेरे हिसाब से हरी खाद के लिए ढेंचा एवं सनई सबसे उपयुक्त रहती है, जो जल्दी बढ़ती है तथा इनसे बायोमास भी अधिक मिलता है।

ढैंचा एक ऐसी फसल है जो अंकुरित होने के बाद पानी की कमी या सूखा को भी सह लेती है तथा वर्षा के मौसम में अधिक पानी गिरने पर पानी भराव को भी सहन कर सकता है। हरी खाद को बुआई के बाद गलभग 50 से 60 दिनों में फूल आने के पूर्व खेत में लोहे के हल, डिस्क हैरो अथवा रोटावेटर से मिट्टी में पलट दिया जाता है, इस समय खेत मे पर्याप्त नमी होनी चाहिए जिससे हरी खाद शीघ्र ही डिकॉम्पोज हो जाए, खाद पलटते समय खेत मे जीवामृत, वेस्ट डिकॉम्पोजर अथवा यूरिया डालने से फसल जल्दी ही डिकॉम्पोज हो जाती है।

दलहनी फसल में एक विशेष गुण होता है कि वह वायुमण्डलीय नाइट्रोजन को अपनी जड़ो में राइजोबियम बैक्टेरिया के माध्यम से भूमि में भंडारित कर लेती है, जिससे खेत मे बोई जाने वाली अगली फसल को पर्याप्त मात्रा में नाइट्रोजन तथा अन्य सभी आवश्यक पोषक तत्त्व उपलब्ध हो जाते है जिससे एक तरफ तो हमारी भूमि का स्वास्थ्य सुधरता है तथा दूसरी ओर रासायनिक खादों का प्रयोग भी कम किया जा सकता है। धान लगाने के पूर्व किसान अपने खेती में हरी खाद की बुआई कर मानसून आने पर हरी खाद को खेत मे पलटकर धान की रोपाई कर रासायनिक उर्वरक के खर्चे को कम कर सकते है। अत: किसान भाइयों से निवेदन है कि आप भी हरी खाद लगाकर अपने खेतों को उपजाऊ बनाये। साथ ही मेरा सभी किसान भाइयों से आग्रह है कि इस जहरीली खेती को बंद कर पर्यावरण, जीव और जमीन को बचाएं। मानव और राष्ट्रहित में महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी की प्राकृतिक कृषि मुहिम से जुड़कर प्राकृतिक खेती को अपनाएं क्योंकि खेती और किसान को बचाने का यही एकमात्र उपाय है।

संकलन-**रामनिवास आर्य**
व्यवस्थापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आचार्य सत्यप्रकाश

करुणा से खत्म होगा क्रोध

जब हम किसी वस्तु को पाने के लिए प्रार्थना करते हैं, तब हो सकता है कि हमारी प्रार्थना तुरंत स्वीकार हो जाए या फिर अगली बार बिल्कुल स्वीकार न हो। इससे हमारे उदास हो जाने का खतरा बना रहता है। हम प्रभु में आस्था खो देते हैं, लेकिन जब हम ऐसी वस्तुओं के लिए प्रार्थना नहीं करते, जो प्रभु हमें देना नहीं चाहते, फिर हमारे निराश होने का प्रश्न ही नहीं उठता। पात्र बनकर प्रार्थना कर पाने के लिए आध्यात्मिक विकास होना बहुत जरूरी है।

हमें आध्यात्मिक विकास पाने के लिए किसी अनुभवी महापुरुष के पास जाना होगा, उनके संपर्क में रहते हुए उनकी दी हुई शिक्षाओं के अनुसार चलकर एवं आत्मिक अनुभव पाकर हमारी श्रद्धा और विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। तब हमें यह भरोसा हो जाता है कि प्रभु हमारे मित्र, शुभचिंतक एवं रक्षा करने वाले हैं और तब हम स्वयं को प्रभु के हवाले छोड़ देते हैं। 'तेरा भाणा मीठा लागे' पात्रता की सर्वोच्च अवस्था है, जिसमें हमारा मन शांत होता है और हमारा अहंकार खत्म हो जाता है। प्रभु द्वारा दी गई बहुमूल्य वस्तुओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए हमें खाली प्याले की तरह विनम्रता अपनानी चाहिए। यदि हम धैर्य और इंतजार करेंगे तो हम उनसे और भी अधिक प्राप्त करेंगे, जितनी कि हमारी कल्पना भी नहीं थी। यदि हम धैर्यवान और शांत होंगे तो हम जान जाएंगे कि प्रभु को पता है कि हमारे लिए सर्वोत्तम क्या है?

क्रोध भ्रम से उपजा एक रूप होता है। यह हिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देता है। इसलिए हमें यह समझना जरूरी है कि आखिर क्रोध है क्या, क्रोध में क्या गलत है और इससे कैसे मुक्ति मिल सकती है। क्रोध नैतिक रूप से गलत तो है ही। यह व्यक्ति के कल्याण के लिए भी बुरा है। क्रोध हमारे लिए जो भी करने का वादा करता है, करुणा उससे भी बेहतर कर सकती है। मनुष्य की दो मानसिक अवस्थाएं होती हैं-स्वस्थ और अस्वस्थ। ये अवस्थाएं कल्याण और नैतिक मूल्य दोनों को दर्शाती हैं। अस्वस्थ मानसिक अवस्थाएं इस अर्थ में मानसिक पीड़ा हैं कि वे स्वयं दुःख के रूप हैं और नैतिक रूप से भी बुरे हैं क्योंकि वे स्वयं को और दूसरों को नुकसान पहुंचाने का कारण बनते हैं। प्रतिशोध और इसे भड़काने वाले क्रोध को दुःख के चक्र को बढ़ावा देने के रूप में देखा जाता है। क्रोध एक प्रकार की मानसिक आक्रामकता है, जो किसी मौजूदा अपराध के कारण उत्पन्न होती है। यह शत्रुता का एक रूप है। शत्रुता क्या है? यह संवेदनशील प्राणियों के प्रति, स्वयं की पीड़ा के प्रति, या दर्दनाक परिस्थितियों के प्रति आक्रामकता है। इसका कार्य अप्रिय स्थितियों और बुरे कार्यों के लिए आधार प्रदान करना है। एक मानसिक पीड़ा के रूप में क्रोध स्वभाव से दर्दनाक होता है।

क्रोध का संबंध अज्ञानता से है। न केवल क्रोध हमेशा अज्ञानता के साथ होता है, बल्कि अज्ञानता भी क्रोध के उत्पन्न होने के लिए एक आवश्यक शर्त है, क्योंकि क्रोध की स्थिति एक विशिष्ट पीड़ित मानसिक स्थिति होती है। इस प्रकार, क्रोध एक प्रकार के भ्रम से प्रेरित होता है, जो दूसरों में बुरे गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है। जब हम सोचते हैं कि कोई चीज हमारे कल्याण के लिए अच्छी है, तो हम मानते हैं कि यह आंतरिक रूप से भी अच्छी है। वहीं, क्रोध हमारे कल्याण में किसी तरह का योगदान नहीं देता। क्रोध आंतरिक रूप से अच्छा नहीं है, यह इस बात से माना जा सकता है कि क्रोध स्वभाव से दर्दनाक है और साधन रूप में भी अच्छा नहीं है। यह इस दावे से माना जा सकता है कि यह दुख और हानिकारक कार्यों के लिए एक स्थिति है।

क्रोध, सुख और कल्याण के बिल्कुल विपरीत होता है। जब हृदय में घृणा का कांटा घर कर जाता है, तो मन को न शांति मिलती है, न ही सुख और न आनंद मिलता है। नींद और धैर्य भी चला जाता है। क्रोध मानसिक शांति या वास्तविक खुशी के साथ सह-अस्तित्व में नहीं रह सकता। क्रोध से विचलित होने पर भोजन का रस भी गायब हो जाता है, मन रुचिहीनता का शिकार हो जाता है। इस प्रकार, क्रोध न केवल स्वभाव से दर्दनाक है, बल्कि यह हमारी खुशियां भी खा जाता है। क्रोध केवल स्थिति को और अधिक दर्दनाक बनाता है, जिससे संकट बढ़ता जाता है।

क्रोध के बजाय हमारे लिए करुणा बेहतर कर सकती है। करुणा में क्रोध को खत्म करने की शक्ति है। करुणा में किसी व्यक्ति की पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता के साथ-साथ यह इच्छा भी शामिल है कि वह उस पीड़ा से मुक्त हो जाए। जो मानसिक स्थिति सामाजिक अन्याय जैसी गलतियों का संकेत देती है, उसे न केवल अपने दर्द के प्रति, बल्कि दूसरों की पीड़ा के प्रति भी सचेत रहना चाहिए। क्रोध, घृणा या अज्ञानता जैसी मानसिक पीड़ा के लिए क्रोध नहीं, करुणा ही उचित प्रतिक्रिया है। यदि आप किसी बात को लेकर क्रोधित या परेशान होते हैं तो कुछ क्षणमन को शांत कर उसके कारण पर चिन्तन करें, आपकी परेशानी अवश्य दूर होगी।

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्राकृतिक कृषि के रोल मॉडल और प्रबल प्रचारक राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी की सलाह

'यूरिया, नाइट्रोजन का प्रचार नहीं, नए बीजों का निर्माण हो'

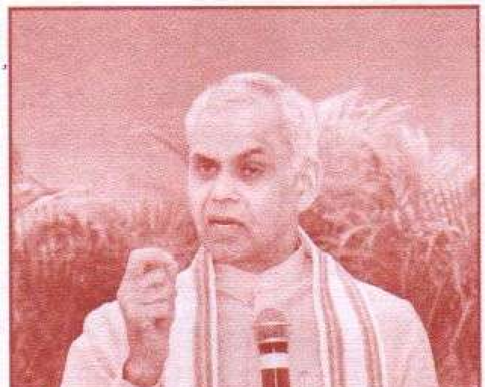
राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी

छत्रपति संभाजीनगर- गुरुकुल शिक्षा और प्राकृतिक कृषि के क्षेत्र में एक स्थापित और सुपरिचित नाम श्री आचार्य देवव्रत का है. वह हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल रहने के बाद इन दिनों गुजरात के राज्यपाल हैं। वह अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों के साथ पहाड़ी राज्य से पश्चिमी समुद्री छोर पर बसे गुजरात में प्राकृतिक खेती के लिए जनजागृति अभियान चला रहे हैं। वह अभी तक गुजरात में नौ लाख से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित कर चुके हैं और भविष्य में वह इससे देशभर के किसानों को जोड़ना चाहते हैं। गत दिनों वह छत्रपति संभाजीनगर में थे। अपने प्रवास के दौरान आचार्य देवव्रत ने लोकमत समूह के संपादकों अमिताभ श्रीवास्तव और योगेश गोले के साथ कृषि विशेषज्ञ और उद्यमी नंदकिशोर कागलीवाल के नेतृत्व में विशेष बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश –

प्रश्न – प्राकृतिक खेती और जैविक खेती में अंतर क्या है?

उत्तर-उदाहरण के लिए हम जंगल में जाते हैं। हजारों तरह के पेड़-पौधे होते हैं. एक-दूसरे के साथ रहकर भी अलग-अलग होते हैं। वहां उन्हें कौन यूरिया देता है? वहां उन्हें कौन डीएपी देता है? वहां कौन उन्हें गोबर की खाद देता है? वहां उन्हें 'पेस्टिसाइड्स', 'इंसेक्टिसाइड्स' कौन देता है? मगर जब जंगल के पेड़ में फल लगने का समय आता है तो वह फल से लद जाता है। तो जो नियम जंगल में काम करे, वही नियम मेरे खेते में काम करे-इसका नाम प्राकृतिक खेती है।

प्रश्न- फिर जैविक खेती क्या है?

उत्तर- जैविक खेती मूल रूप से भारतीय पद्धति नहीं है, क्योंकि इसमें जिस केंचुए का उपयोग किया जाता है, वह भारत का नहीं है. उसे विदेश से आयात किया जाता है. उसका नाम 'ईसेनिया फेटिडा' है. वह केवल गोबर खाता है, मिट्टी नहीं खाता है, न ही वह मिट्टी में छेद करता है और एक निश्चित तापमान से अधिक तापमान बढ़ने या घटने से पर वह मर जाता है। वह अपने शरीर से भारी धातुओं को छोड़ता है, जो कई रोगों को जन्म देते हैं।

प्रश्न- जैविक खेती में अड़चन क्या है?

उत्तर- 'वर्मी कम्पोस्ट' बनाने में एक से डेढ़ महीना लगता है। फिर उसे उलटना-पलटना पड़ता है, छानना पड़ता है, जिसमें केंचुए बाहर आ जाते हैं, उन्हें फिर डालना पड़ता है। गोबर नीचे रह जाता है, इतना परिश्रम करना पड़ता है।

प्रश्न -आपका रासायनिक खेती से मोहभंग कैसे हुआ ?

उत्तर- मैं रासायनिक खेती करता था, मेरी लागत बढ़ती गई और मेरी खेती बंजर हो गई। तब दु:खी होकर मैंने हिसार के कृषि विश्वविद्यालय के तत्कालीन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हरिओम से मुलाकात की। उनसे मैंने रासायनिक खेती का विकल्प पूछा तो उन्होंने मुझे जैविक खेती बताया। मैंने पूरी जैविक खेती की व्यवस्था की मगर पहले साल मुझे फसल से कुछ नहीं मिला। सब कीट-पतंगे खा गए, उसके बाद दूसरे साल में आधी फसल मिली। तीसरे साल मुझे अस्सी फीसदी फसल मिली, उससे न तो मेरा खर्च कम हुआ, न ही मेरी मेहनत कम हुई और न मेरा उत्पादन पूरा हुआ। तब मैंने वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक से कहा, मेरी 180 एकड़ जमीन है, जिसमें ऐसा हुआ किंतु दो-तीन एकड़ वाला छोटा किसान इस तरह की खेती से कैसे अपना जीवनयापन करेगा? तो उन्होंने कहा इसमें तो ऐसा ही होगा और मुझे कुछ जैविक खेती का साहित्य थमा दिया।

प्रश्न- जैविक खेती के साहित्य से क्या कुछ लाभ हुआ?

उत्तर- उपलब्ध कराए गए साहित्य में लिखा था कि एक टन गोबर की खाद में दो किलो नाइट्रोजन मिलेगी। दो फसलें गेंहू और चावल, भारत के खाद्यान्न को भरने का काम करती हैं जिनकी पूरी फसल पाने के लिए एक एकड़ में साठ किलोग्राम नाइट्रोजन की

आवश्यकता होती है। यदि आप रासायनिक खेती करते हैं तो साठ किलो यूरिया और डीएपी खरीद कर काम चलाया जा सकता है। यदि जैविक खेती करते हैं तो साठ किलोग्राम नाइट्रोजन के लिए तीन सौ टन गोबर की आवश्यकता होगी, ऐसे में सवाल उठता है कि क्या भारत के पास इतना पशुधन है? दूसरी ओर जहाँ इतनी गोबर की खाद डाली जाएगी, वहाँ मीथेन जैसी गैसों का उत्सर्जन होगा। मीथेन तो कार्बन डाइऑक्साइड से ज्यादा खतरनाक है और जो नाइट्स ऑक्साइड यूरिया, डी.ए.पी. से निकलता है, वह तो 312 गुना खतरनाक है. इसलिए रासायनिक खेती और जैविक खेती दोनों ही 'ग्लोबल वार्मिंग' का कारण है।

प्रश्न- छोटे किसानों के समक्ष जैविक खेती की अड़चनें क्या हैं?

उत्तर- दरअसल तीन सौ टन खाद के लिए बीस-तीस पशुधन की आवश्यकता होगी, जिन्हें रखने के लिए एक एकड़ जगह की आवश्यकता होगी। ऐसे में छोटा किसान परिवार को पालेगा या पशुधन को पालेगा? इसीलिए जैविक खेती फेल हुई। कुछ आईसीएआर के वैज्ञानिक भी मेरे विरोध में आ गए। लोगों को लगा कि मैं भी जैविक खेती करता हूँ, उनको पता ही नहीं था कि इसमें-उसमें क्या अंतर है और वे उदाहरण देते हैं श्रीलंका का, मगर मैं भी कहता हूँ कि जो जैविक खेती करेगा, वह भूखा मरेगा क्योंकि उसमें संभव ही नहीं है। किसान कैसे तीन साल इंतजार करेगा?

प्रश्न- प्राकृतिक खेती को किस चीज की जरूरत होती है?

उत्तर- प्राकृतिक खेती में खाद नहीं चाहिए। रासायनिक खेती में 'इनपुट' बाहर से खरीदना पड़ता है। जैविक खेती में भी 'इनपुट' बाहर से खरीदना पड़ते हैं। अब तो जैविक खेती के 'इनपुट' के बड़े-बड़े कारखाने लग लग गए हैं, जो रासायनिक से भी महंगे हैं लेकिन प्राकृतिक खेती में किसान को 'इनपुट' बाहर से नहीं लाना पड़ता। इसमें आवश्यक गन्ने से बना गुड़ भी किसान के घर का, गाय का गोबर भी उसी का और मिट्टी भी उसी की होती है। उसे बाजार में जाने की कोई जरूरत ही नहीं होती है।

प्रश्न- आपको प्राकृतिक खेती की प्रेरणा कहाँ से मिली?

उत्तर- मेरे गुरुकुल में बच्चों के लिए मैं खेती करता था। उसमें यूरिया, डीएपी सब कुछ डालता था। एक दिन एक कर्मचारी दवा छिड़कते हुए बेहोश हो कर गिर गया। उसे अस्पताल में दाखिल कराया। तीन दिन में उसकी जान तो बच गई, लेकिन मेरे मन में विचार आया कि इस कर्मचारी ने न तो इस जहर को खाया, न पिया और सिर्फ सूंघने से बेहोश हो गया और मैं तो बच्चों को दी जाने वाली सब्जी में व अन्य फसलों में इसे डलवाता हूँ तो मैं इस पाप का अपराधी हूं इसलिए मैंने सोचा कि मैं यह नहीं करूंगा। फिर मैंने जैविक खेती की, जिसमें मैं 'फेल' हो गया। उसके बाद प्राकृतिक खेती आरम्भ की। अब मैं 180 एकड़ में प्राकृतिक खेती करता हूँ और गन्ना, धान, चावल, गेंहूं, सब्जी-भाजी, फलों के वृक्ष से उत्पादन लेता हूं, जो रासायनिक खेती करने वालों से अधिक है। यह इसलिए हुआ कि मेरी धरती का ऑर्गेनिक कार्बन से 0.2, 0.3, 0.4 से अब 1.7 तक चला गया है. दुनिया का कोई भी कृषि वैज्ञानिक यह सिद्ध कर दे कि यूरिया, नाइट्रोजन, कीटनाशक से ऑर्गेनिक कार्बन बढ़ता है तो उसे हम अपना गुरु बनाने के लिए तैयार हैं। मैं कहता हूँ कि प्राकृतिक खेती से हर वर्ष ऑर्गेनिक कार्बन बढ़ता है।

प्रश्न- प्राकृतिक खेती के प्रचार की स्थिति क्या है?

उत्तर-महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस ने पुणे में प्राकृतिक खेती पर एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें करीब चार-पांच हजार किसान प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित थे और करीब पांच लाख किसानों को ऑनलाइन जोड़ा गया था। इसी तरह गोवा, असम, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, उत्तर प्रदेश में भी कार्यक्रम हुए हैं। केंद्र सरकार भी इसके विस्तार पर गंभीरता से विचार कर रही है।

प्रश्न- जब भारत में अनाज का अभाव था, तब अधिक उत्पादन ही हमारा लक्ष्य था मगर अब गुणवत्ता, पोष्टिक तत्त्वों के बारे अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, आपको क्या लगता है?

उत्तर- साठ के दशक में जो हमारी स्थिति थी, उससे जिन वैज्ञानिकों ने बाहर निकाला, हम उनके आभारी हैं। उनका कोई विरोध नहीं है, वह उस समय की जरूरत थी। उनको भी इसका अनुमान नहीं था कि लोग इतना रासायनिक खेती की ओर बढ़ जाएंगे किंतु उस समय स्वामीनाथन ने प्रति हेक्टेयर 13 किलोग्राम नाइट्रोजन डालने का प्रावधान किया था। अब तो 13 बैग एक एकड़ में डाले जा रहे हैं। उस समय भुखमरी का कारण केवल एक नहीं था, उस समय हमारी धरती पर अन्न पैदा करने का भूखंड बहुत थोड़ा था। सब तरफ जंगल था, ट्रैक्टर, मशीनरी, नहरें आदि नहीं थे। यातायात के लिए सड़कें, उपयोग के लिए बिजली नहीं थी। हालांकि उस समय की जरूरतें भी बहुत कम थीं। जब देश आजाद हुआ, तब सारी चीजें आयीं, फिर देश ने अलग कृषि विभाग बनाया। कृषि भूखंड बढ़ा, पानी के साधन बढ़े, बिजली आयी। हरित क्रांति के तहत बीजों का निर्माण हुआ। मैं अब विश्वविद्यालयों से कहता हूँ कि अब उनका काम यूरिया, नाइट्रोजन का प्रचार नहीं, बल्कि बीज निर्माण का है। ऐसे बीज जो कम पानी में भी चलें और जलवायु परिवर्तन को सहन कर सकें। उनमें पोष्टिक तत्त्व भी पर्याप्त हों और वे धरती से पोषक तत्त्व कम लें।

शिवम् शास्त्री

चाँदपुर मेले की ऐतिहासिक घटना

हमारे देश के इतिहास में ऐसी अनेक घटनाएं है जो भारतीय संस्कृति और देश के गौरव को प्रदर्शित करती है, ऐसी ही एक घटना का यहाँ वर्णन है जिसमें आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने सटीक तर्कों से वैदिक संस्कृति की चहुंओर प्रशंसा करवाई थी। उन दिनों शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश के समीप चाँदपुर गाँव में मेला लगा था। गत वर्ष इसी मेले में पादरियों, मुसलमानों और कबीर पंथियों में वाद-विवाद हुआ था। इस चर्चा में मुसलमानों का पलड़ा भारी रहा था।

उस गाँव में कबीरपंथियों की संख्या ज्यादा थी, उनके कारोबार दूर-दूर तक फैले हुए थे। उनमें प्यारेलाल और उनके भाई मुक्ताप्रसाद प्रमुख थे। वे जब अपने काम से इधर-उधर जाते तो मुसलमान उन्हें चिढ़ाते 'मेले में आप लोगों ने देख लिया कि इस्लाम धर्म ही सच्चा धर्म है। अब आपको इसे स्वीकार कर लेना चाहिए।' वे लोग उनकी इस बात का कोई उत्तर न दे पाते इसलिए इस वर्ष के मेले में वे कोई ऐसा विद्वान् लाना चाहते थे जो वाद-विवाद में मुसलमानों और पादरियों को निरुत्तर कर सके।

उन्होंने आर्यसमाज के एक सज्जन मुंशी इन्द्रमणि मुरादाबादी से सम्पर्क किया। उन्होंने उन्हें वचन दिया कि मैं तो मेले में अवश्य ही आऊँगा, परन्तु मेरी पकड़ इस विषय में गहरी नहीं हैं। आप वेदों के महापण्डित स्वामी दयानन्द जी को आमन्त्रित कीजिए। उनकी विद्वत्ता के सामने कोई भी मतावलम्बी नहीं ठहर पाता। स्वामी जी को आमन्त्रित करने का कार्य इन्द्रमणि जी को ही सौंप दिया गया। उन्होंने सहारनपुर जाकर स्वामी जी से सम्पर्क किया तो स्वामी जी ने सहर्ष इसकी स्वीकृति दे दी। यथासमय मुंशी इन्द्रमणि जी स्वामी जी को लेकर चाँदपुर पहुँच गए। कबीरपंथियों की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। वे लोग स्वामी जी के दिव्य दर्शन पाकर कृतकृत्य हो उठे। उन्होंने स्वामी जी को श्रद्धापूर्वक गाँव में ठहराना चाहा, परन्तु स्वामी जी ने स्वीकार न किया। गाँव से दूर उन्होंने अपने डेरे की व्यवस्था कराई। शास्त्रार्थ के लिए तम्बू लगवा दिए गए।

19 मार्च सन् 1877 को मेला आरम्भ हुआ। अगले दिन शास्त्रार्थ की तिथि निश्चित कर दी गई। मुसलमान दूर-दूर से इस शास्त्रार्थ को सुनने के लिए आ रहे थे। इन्द्रमणि उनकी भारी संख्या देखकर आशंकित हो गये। उसने स्वामी जी से कहा-मुसलमान भारी संख्या में उपस्थित हैं। ये लोग शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हैं इसलिए महाराज शास्त्रार्थ में कठोर शब्दावली का प्रयोग न करें तो अच्छा है।

स्वामी जी ने इन्द्रमणि को उत्साहित करते हुए कहा-इन्द्रमणि! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। दयानन्द कभी सत्य की प्रतिष्ठा करने से चूकता नहीं है। सत्य मेरा अपना नहीं है। सत्य सनातन है, उसका प्रचार-प्रसार मेरा ध्येय है। इस मार्ग से मुझे कोई विचलित नहीं कर सकता।

20 मार्च को शास्त्रार्थ सभा का आयोजन किया गया। समय पर पण्डित, मौलवी और पादरी उसमें आ विराजे। विशाल पंडाल ठसाठस भर गया। लगता था कि सारा मेला ही सभा-स्थल पर उपस्थित हो गया है। निम्न पाँच विषय शास्त्रार्थ के समय विचारार्थ निश्चित किए गए:-

1. सृष्टि की रचना ईश्वर ने कब, क्यों और किससे की ?
2. ईश्वर सर्वव्यापक है या नहीं ?
3. ईश्वर दयालु और न्यायकारी किस प्रकार है ?
4. किस कारण वेद, बाइबिल और कुरान ईश्वर वचन हैं ?
5. मोक्ष से क्या अभिप्राय है ? कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ तो मौलवी और पादरी आपस में उलझ गए। एक-दूसरे को कटु वचन कहने लगे। स्वामी जी ने कहा कि हम लोग यहाँ सत्य के निर्णय के लिए उपस्थित हुए हैं। आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग करना शोभनीय नहीं है।

स्वामी जी ने बोलना आरम्भ किया तो पूरी सभा ने दत्तचित्त होकर सुना। मौलवी और पादरी उदास हुए घर लौटे। अगले दिन मोक्ष विषय पर ही चर्चा हुई। इस विषय का आरम्भ स्वामी जी ने ही किया। उन्होंने कहा-सुख-दु:ख से छूट कर परमानन्द की प्राप्ति ही मोक्ष है। इससे मनुष्य जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

मौलवियों और पादरियों को विशेष रुचि से नहीं सुना गया। परिणाम यह हुआ कि पादरी अगले ही दिन मेला छोड़कर चले गए। मौलवी भी नहीं ठहरे। एक-दो पादरी जो महाराज से अत्यधिक प्रभावित थे, वहीं बने रहे।

स्वामी जी उनके साथ धर्म-चर्चा करते रहे। स्वामी जी ने उनसे कहा कि बाइबिल में कहीं भी ऐसा नहीं लिखा कि ईसा पर विश्वास लाने से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है। यह पादरियों की कल्पना मात्र लगता है। इस प्रकार स्वामी दयानन्द जी ने अपने सटीक तर्कों से न केवल दूसरे मत के लोगों को सत्य का आइना दिखाया बल्कि वैदिक धर्म के प्रति लोगों में विश्वास भी पैदा किया।

संकलनः- **शिवम् शास्त्री**
आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के राष्ट्रीय शिविर का भव्य समापन

शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान जरूरी-स्वामी डॉ0 देवव्रत सरस्वती

जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन सुरेन्द्र आर्य मुख्य अतिथि एवं पद्मश्री डॉ0 सुकामा आचार्या मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे

हरियाणा राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष सुश्री सोनिया अग्रवाल समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि पधारीं

कुरुक्षेत्र (राजीव् कुमार)-गुजरात के राज्यपालश्री आचार्य देवव्रत जी की प्रेरणा से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 16 से 25 जून तक लगाया गया जिसमें आधुनिक द्रोणाचार्य के नाम से विख्यात सार्वदेशिक आर्य वीर दल न्यास के अध्यक्ष स्वामी डॉ0 देवव्रत जी सरस्वती के कुशल मार्गदर्शन में सुयोग्य प्रशिक्षकों और विद्वानों के द्वारा देश के विभिन्न प्रान्तों से शिविर में पधारी आर्य वीरांगनाओं को शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण दिया गया। 10 दिवसीय इस राष्ट्रीय शिविर में गुरुकुल प्रबंधक समिति के प्रधान राजकुमार गर्ग, प्राचार्य सूबे प्रताप, व्यवस्थापक रामनिवास आर्य एवं मुख्य संरक्षक संजीव आर्य ने समूची व्यवस्थाओं को संभाला, साथ ही सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका श्रीमती व्रतिका आर्या को शिविर संचालन में हर संभव सहयोग प्रदान किया।

मंगलवार, 25 जून को सायं शिविर का भव्य समापन समारोह हुआ जिसमें जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन एवं विख्यात समाजसेवी सुरेन्द्र कुमार आर्य ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। समारोह में पद्मश्री सम्मान से विभूषित आर्य विदुषी डॉ0 सुकामा आचार्या ने मुख्य वक्ता एवं हरियाणा राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष सुश्री सोनिया अग्रवाल विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंची। इसके अतिरिक्त कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस से आचार्या पवित्रा विद्यालंकार, हरियाणा की संचालिका डॉ. आचार्या अमरकौर, दिल्ली संचालिका श्रीमती शारदा आर्या, राजस्थान की संचालिका सरोज आर्या, पीयूष आर्य चैन्नई, अंशुमान उपाध्याय आदि अनेक महानुभाव समारोह में उपस्थित रहे। मंच पर पहुंचने पर सभी अतिथियों का 'ओ३म' के पटके पहनाकर अभिनन्दन किया गया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि सुरेन्द्र आर्य ने कहा कि वर्तमान समय में आर्य समाज ही ऐसा संगठन है जो युवाओं को सही दिशा और दशा देने का काम कर रहा है। वैदिक संस्कृति और भारत के गौरवशाली इतिहास को भूलकर आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण कर रही है जो हमारे राष्ट्र के लिए बहुत घातक है। उन्होंने कहा कि कहा कि ऐसे शिविरों से युवाओं को संस्कार व संस्कृति की शिक्षा मिलती है। इसके साथ-साथ युवाओं का मनोबल व आत्मविश्वास बढ़ता है। युवा शिविर में जहाँ अनेक कलात्मक कार्य सीखते हैं वहीं उनके ज्ञान में भी वृद्धि होती है, इसलिए युवाओं को शिविर में शामिल होकर बुराइयों को दूर करने का संकल्प व प्रेरणा लेनी चाहिए। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह गुरुकुल शिक्षा जगत् में अकेला ऐसा संस्थान है जिसमें प्रवेश पाने के लिए छात्र तरसते हैं। यहाँ सिफारिश नहीं बल्कि केवल योग्यता ही प्रवेश का एकमात्र आधार है। शिविर में शामिल युवाओं का सौभाग्य है कि उन्हें ऐसी सुसंस्कारित संस्था में सीखने का शुभावसर मिला। उन्होंने कहा कि हर युवा को बुराई दूर करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। युवा अपने भीतर अच्छे और बुरे की सोच विकसित करें तभी वे जीवन की कला को समझ पाएंगे। शिविर में युवाओं को मर्यादा में रहकर जीवन जीने का तरीका सिखाया गया, यदि वे इस तरीके को समाज में बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर पाएंगे तो इस शिविर का उद्देश्य नि:सन्देह सार्थक सिद्ध होगा।

समारोह की मुख्य वक्ता डॉ0 सुकामा आचार्या ने कहा कि ब्रह्म और क्षात्र बल के संगतिकरण से राष्ट्र सबल बनेगा और व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र का निर्माण होगा। राष्ट्रीय शिविर के

सफल आयोजन की बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे शिविर युवाओं को बौद्धिक और शारीरिक स्तर पर सक्षम बना रहे हैं। सामाजिक, आत्मिक और बौद्धिक उन्नति ही सच्ची उन्नति है, ऐसे शिविरों से युवाओं में उच्च आदर्शों की स्थापना होती है जो उन्हें भविष्य में देश की उन्नति में सहायक बनाती है। उन्होंने कहा कि युवा ही समाज और देश को नई दिशा और दशा दे सकते हैं, ऐसे में युवाओं को बुराई से बचाने और उन्हें अच्छे संस्कार देना अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि दुनिया में विचार से बड़ा कोई खजाना नहीं होता, जिनके विचार अच्छे और श्रेष्ठ है, उनके लिए जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं होता, सफलता उनके कदम चूमती है। उन्होंने युवतियों से कहा कि यह आपका सौभाग्य है कि इस शिविर में आकर आपको ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के उन्नत विचारों का स्मरण करने का अवसर मिला है, अब आपका दायित्व है कि इन विचारों का अधिक से अधिक विस्तार कर समाज का कल्याण करो।

डॉ0 सुकामा आचार्या ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम नारी शिक्षा को प्रभावी रूप से अनिवार्य करवाने के लिए प्रयास किया। उससे पूर्व तो नारी को समाज में कोई अधिकार और सम्मान ही प्राप्त नहीं था। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रयासों से ही समाज में नारी को न केवल सम्मान मिला बल्कि आज यदि नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है तो इस पूरा श्रेय भी आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे समाज सुधारकों को जाता है।

समारोह की विशिष्ट अतिथि एवं हरियाणा राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष सुश्री सोनिया अग्रवाल ने वीरांगनाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा दिया है जिसे सार्थक भी किया जा रहा है मगर समय के साथ अब इसमें कुछ बदलाव की जरूरत है, अब समाज में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और बेटी बसाओ' का प्रचलन होना चाहिए क्योंकि राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष होने के नाते समाज में आपसी रिश्तों में आ रही दरार की अनेक घटनाएं हर रोज उनके समक्ष आती है, ऐसे में अब बेटियों को रिश्तों की दरकती दीवार को संभालने का कार्य भी करना होगा। उन्होंने आर्य वीरांगनाओं का योगासन, स्तूप निर्माण, लेजियम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम, तलवारबाजी का शानदार प्रदर्शन देखकर कहा कि यह वाकई अद्भुत हैं। उन्होंने कहा कि गुरुकुल ऐसे शिविरों के माध्यम से समाज में जो जन-जागृति पैदा कर रहा है और युवाओं को नशाखोरी, पाखण्ड, अज्ञानता, जात-पात के विनाशकारी मार्ग से वेदों के मार्ग की ओर, भारतीय सभ्यता-संस्कृति और नैतिक मूल्यों के संवर्धन और प्रचार का जो कार्य कर रहा है, वह अपने आप में अनुपम है जिसके लिए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी सहित समस्त गुरुकुल परिवार धन्यवाद का पात्र है।

समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे स्वामी डॉ0 देवव्रत सरस्वती ने कहा कि युवा पीढ़ी को शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि संस्कारों से ही संस्कृति का निर्माण होता है। उन्होंने कहा कि शिविर का उद्देश्य समाज में ऐसी सुन्दर व्यवस्था तथा सद्भावना का निर्माण करना है जिससे प्रत्येक प्राणी अबाध रूप से जीवन जी सके। वर्तमान समाज अन्याय, असमानता, ईर्ष्या, जाति-पाति, वर्ण-भेद, वर्ग-भेद आदि बुराइयों से ग्रस्त हैं। इन बुराइयों को दूर करने के लिए समाज में शिक्षा, समृद्धि व समानता के अतिरिक्त वैज्ञानिक सोच विकसित करना परम् आवश्यक है तभी सच्चे समाज की स्थापना हो सकती है। उन्होंने आह्वान किया कि वे समाज में फैले भ्रष्टाचार, अशिक्षा, गरीबी, असमानता, शोषण, साम्प्रदायिकता जैसी बुराइयों को जड़ से खत्म करने में संकल्प लें। आर्य समाज इन बुराइयों को दूर करने में अहम् भूमिका निभा रहा है, यदि युवा भी अपने क्षेत्रों में जाकर समाज में फैली बुराइयों को दूर करने का प्रयास करेंगे तो एक दिन निःसन्देह एक आदर्श समाज की स्थापना होगी।

गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग ने शिविर में वीरांगनाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि इतनी भीषण गर्मी के बावजूद उन्होंने 10 दिनों तक कठोर प्रशिक्षण प्राप्त किया, इससे दयानन्द के सच्चे सिपाही होने का परिचय मिलता है। वीरांगनाओं ने अनुशासनपूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया, यह उनकी आदर्श सोच का परिचय है जिसे वे समाज में फैलाकर एक सच्चे आर्यवीर की भूमिका निभाएंगे। उन्होंने गुजरात के राज्यपाल एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक आचार्य देवव्रत का विशेष तौर पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य जी ने समाज को एक नई दिशा देने के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करने का बीड़ा उठाया ताकि समाज को आदर्श व एक रचनात्मक दिशा मिल सके। अन्त में समारोह में पधारे सभी अतिथियों को गुरुकुल के अधिकारियों द्वारा 'ओ३म्' का स्मृति चिह्न व शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

शिविर की संचालिका श्रीमती व्रतिका आर्या ने शिविर के सफल आयोजन पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सभी अधिकारियों का विशेष धन्यवाद करते हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा वेद प्रचार के क्षेत्र में जितना कार्य किया जा रहा है, पूरे देश में अन्य किसी संस्था द्वारा नहीं किया जा सकता। गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने समाज को नई दिशा देने के लिए एक आदर्श स्थापित किया है।

सबसे उत्तम है मटके का पानी

डॉ. देव आनन्द

आधुनिक चकाचौंध और टेक्नोलॉजी से लबरेज युग में देसी मटकों का क्रेज आज भी बरकरार है। गर्मी का सितम जब नॉनस्टॉप होता है तो लोगों को देसी मटके की याद अचानक से आनी शुरू हो जाती है। आधुनिक युग में शायद ही कोई घर ऐसा हो, जिनके यहां फ्रिज न हो। बावजूद इसके देसी मटको का क्रेज अपने जगह बरकरार है। एक प्रचलित कहावत है कि **'सोने की खोज में, हीरे को भूल गए।'** कुछ ऐसा ही हुआ, जब जमाने ने बदलाव के लिए करवट ली, तो जनमानस ने देसी परंपराओं के साथ प्राचीन धरोहर कही जाने वाली वस्तुओं से भी तौबा कर लिया। पर, वक्त का पहिया फिर बदला है। इसलिए लोग पुराने जमाने की ओर फिर से मुड़ने लगे हैं। मटकों का पानी आज भी फ्रिज के मुकाबले ठंडा और स्वादिष्ट लगता है।

दूषित पानी के इस्तेताल से बढ़ते मरीजों को जबसे चिकित्सकों ने मटके का पानी पीने की सलाह दी है, लोगों का रुझान अनायास घड़ों की ओर दौड़ा है। मिट्टी का ये आइटम न सिर्फ मन को भाता है, बल्कि चिलचिलाती गर्मी में सूखे गलों को भी तरबतर कर देता है। घड़े का पानी पीने में तरावट आती है। गले में अलौकिक ठंड़क पड़ती है, क्योंकि घड़े के पानी में मिट्टी की सोंधी-सोंधी सुगंध जो आती है। घड़े का पानी जमीन से तुरंत निकले ताजे पानी जैसा अहसास करवाता है। मटके का पानी ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करता है, शरीर का बैड कोलेस्ट्रॉल कम करता है और ब्लड सकुर्लेशन नियंत्रित रखने में मदद करता है।

स्वस्थ शरीर के लिए ताजा पानी लाभदायक होता है। इसलिए, देसी घड़े का पानी न सिर्फ स्वास्थ्य के लिए बल्कि हाजमा के लिए भी गुणकारी होता है। चिकित्सीय सर्वेक्षण बताते हैं कि सर्दियों के मुकाबले गर्मियों में मटके का ठंडा पानी शरीर के लिए बहुत उपयोगी होता है क्योंकि मटके की दीवारें से पानी धीरे-धीरे रिसता है और बर्तन की सतह से वाष्पित होता है। इसका भीतरी वातावरण वाष्पीकरण ऊष्मा ठंड़क का उत्सर्जन करता है जिससे अंदर जमा पानी चंद मिनटों में ठंडा हो जाता है।

दरअसल, वाष्पीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पानी की तरलता से गैसीय अवस्था में बदलती है। जब पानी वाष्पित होता है, तो यह अपने आसपास की गर्मी को अवशोषित कर लेता है। बढ़ता तापमान मटके में मौजूद पानी को गर्मी से बचाता है। मटका मिट्टी से निर्मित होता है जिसमें सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जो पानी को वाष्पित होने में मदद करते हैं। घड़े की मिट्टी पानी को इन्सुलेटर करती है जिसके इस्तेमाल से शरीर हाइड्रेट रहता है और पाचन प्रक्रिया हमेशा दुरुस्त रहती है। दरअसल, मटका एक प्राकृतिक कटोरा है जो मानव द्वारा निर्मित मात्र है जिसकी अंदरुनी दीवारें पानी को ठंडा बनाती हैं। मटके के धातु और मिट्टी के भीतर रखे गए पानी के संपर्क से पानी की ठंडक सूखने की प्रक्रिया धीरे-धीर होती है जिसमें पानी लंबे वक्त तक ठंडा रहता है।

फ्रिज और आरओ पानी की आदत इंसान को कई बीमारियों से घेर रही है। जबकि, घड़े का पानी कई बीमारियों से लड़ने की ताकत रखता है। तभी तो घरों के बुजुर्ग अभी भी मिट्टी के बर्तनों का पानी पीने को कहते हैं। मटके की सबसे बड़ी खासियत यह है कि मटका आरओ द्वारा प्यूरीफायर किए पानी से मर चुके मिनरल्स को भी दोबारा जिंदा कर देता है। अगर आरओ से पानी निकालकर घड़े में सिर्फ पंद्रह मिनट तक रखा जाए, तो उसके मरे हुए मिनरल्स वापस पनप जाते हैं क्योंकि मिट्टी के घड़े में कैल्शियम की मात्रा बहुतायत रूप में रहती है।

चिकित्सक कहते आए हैं कि आरओ द्वारा प्यूरीफायर पानी से सारे मिनरल्स निकल जाते है, जिस कारण उसका टीडीएस लेवल बहुत कम हो जाता है जिसके सेवन से लोगों की पाचन प्रक्रिया दिनोंदिन प्रभावित हो रही है। तमाम अन्य बीमारियां भी लग रही हैं। आरओ पानी में बैक्टीरियल इन्फेक्शन और फंगल इन्फेक्शन की संभावना सबसे ज्यादा रहती हैं। इसके अलावा पेट से संबंधित अधिकांश बीमारी भी दूषित पानी के इस्तेमाल से पनपती हैं।

आरओ पानी को पीने की कोई भी सलाह नहीं देता, विशेषकर बच्चों को? उनके लिए सबसे घातक होता है ये पानी? आरओ पानी का मतलब है टोटल डिसोल्वड सालिबिलिटी ? मतलब उस पानी में साधारण पानी की अपेक्षाकृत कम खनिज लवणों का होना, जिसमें हानिकारक तत्त्व बेहताशा घुले होते हैं। पानी को दो-तीन बार छानने या फिल्टर करने का मतलब होता है पानी की आत्मा को अंदर खींचकर शरीर से अलग कर देना। यही कारण है कि चिकित्सक मरीजों को मटके का ही पानी पीने की सलाह देते हैं। लोग भी अब समझ गए हैं, इसलिए गर्मी शुरू होते ही मटकों की खरीदारी करनी आरंभ कर देते हैं।

संकलन-**डॉ. देव आनन्द** मुख्य चिकित्सा अधिकारी
स्वामी श्रद्धानन्द योग, आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सालय, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

गुरुकुल में राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी की प्रेरणा से

प्रान्तीय शिविर में 600 युवाओं का हुआ यज्ञोपवीत संस्कार

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)- गुरुकुल में चल रहे प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर में सभी 600 आर्यवीरों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। आचार्य दयाशंकर शास्त्री जी के मार्गदर्शन वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच युवाओं ने जनेऊ धारण किया। उन्होंने कहा कि यज्ञोपवीत के ये तीन धागे हमें अपने देवों के प्रति, हमारे ऋषियों तथा हमारे माता-पिता के प्रति हमारे जो ऋण, कर्त्तव्य और दायित्व हैं उनका स्मरण कराते हैं। पहला ऋण माता-पिता का ऋण है, दूसरा ऋण गुरुओं का ऋण है तथा तीसरा ऋण ऋषिऋण होता है, हमें इन तीनों ऋणों से उऋण होने के लिए अच्छे आचरण और उत्तम कार्य करने चाहिए।

उन्होंने कहा कि यज्ञोपवीत धारण करने वाले युवा भाग्यशाली है, यह कोई मामूली धागा नहीं है मुगलकाल में वीर हकीकत राय ने वैदिक धर्म निभाते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया था। उन्होंने चोटी और यज्ञोपवीत उतारने की बजाए अपने प्राणों की आहूति दे दी थी इसलिए वैदिक संस्कृति में यज्ञोपवीत का बड़ा महत्त्व है। यज्ञोपवीत संस्कार के उपरान्त सभी आर्यवीरों ने समाज से पाखण्ड, अंधविश्वास आदि बुराइयों को मिटाने का संकल्प लिया। इस दौरान युवाओं ने भारी संख्या में हाथों व गले में पहने हुए काले धागे, कंडे-ताबीज आदि उतारकर पांखण्ड से दूर रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य, वरिष्ठ योग शिक्षक सूर्यदेव आर्य, व्यायाम शिक्षक संदीप वैदिक, अमित आर्य, सोहनवीर आर्य, नरेश आर्य, महावीर आर्य, सुरेन्द्र आर्य, आर्यमित्र आर्य सहित सभी प्रशिक्षक मौजूद रहे।

शिविर संयोजक संजीव आर्य ने आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुण और अवगुण सभी में होते हैं मगर जो लोग अपने अवगुणों को दूर करके गुणों का विकास करते हैं, हमेशा समाज कल्याण के कार्य हेतु तत्पर रहते हैं वहीं जीवन में उन्नति के शिखर

पर पहुंचते हैं। हमें अपने आचरण और व्यवहार में मधुरता लानी चाहिए, दूसरों से जैसे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं, स्वयं भी वैसा ही व्यवहार करें। छोटी-छोटी बातों पर निराश न हों, असफलताओं से कतई न घबराएं बल्कि समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एकाग्रचित्र होकर लगातार प्रयत्न करें, आप अवश्य सफल होंगे। भजनोपदेशक जयपाल आर्य व जसविन्द्र आर्य की टीम ने राष्ट्रप्रेम और प्रभु भक्ति के भजन सुनाकर आर्यवीरों को ईश्वर और राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों को हमेशा याद रखने का आह्वान किया।

महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देव्रवत जी की प्रेरणा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाण के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल के प्रान्तीय शिविर में कुरुक्षेत्र, कैथल, पानीपत, जीन्द, हिसार जिलों के विभिन्न गाँवों से 600 युवाओं ने भाग लिया जिन्हें आर्य वीर दल के 20 से अधिक शिक्षकों द्वारा जूड़ो-कराटे, लाठी संचलन, डम्बल, लेजियम, स्तूप-निर्माण, दंड-बैठक तथा विभिन्न योगासनों के शारीरिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त महाशय जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य, संदीप वैदिक आदि विद्वानों द्वारा बौद्धिक ज्ञान भी प्रदान किया गया। शिविर में युवाओं को नशाखोरी, कन्या भ्रूण-हत्या, पाखण्ड, गुरुड़म जैसी बुराइयों को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया जिससे वे न केवल अपना जीवन सुधार सके बल्कि दूसरे युवाओं को भी सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें।

वेदों में अलंकार

आचार्य दयाशंकर

गतांक से आगे...

निदर्शना- यह अलंकार दृष्टान्त के समान होता है परन्तु यहाँ अप्रस्तुत वाक्य प्रस्तुत वाक्य की पूर्ति करता है, यथा-

उतत्व: पश्यन्न ददर्श वाचमुतत्व: श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम।
उतो त्वमस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासा: ॥

(ऋग्वेद-१०/७१/४)

अर्थात् भाषा- विशेषकर वैदिक संस्कृत भाषा जिसका यहाँ प्रकरण है। लिखा-दिखाकर कोई तो उसको समझ नहीं पाते (लिपि के अज्ञान से) कोई उसको सुनकर भी समझ नहीं पाते (शब्दार्थ का बोध न होने से) और किसी के लिए यह भाषा अपने तन को अपने गूढ़ छुपे हुए अर्थ को प्रकट कर देती है, जिस प्रकार गृहस्थ-कर्म की कामना करती हुई, सुन्दर वस्त्र पहनी हुई पत्नी अपने पति के लिए अपने शरीर को प्रकट कर देती है। यहाँ 'भाषा' का अर्थ पत्नी के ऊपर ही समाप्त होता है इसीलिए यह निदर्शना अलंकार है।

अप्रस्तुत प्रशंसा-जिस अलंकार में केवल अप्रस्तुत विषय का वर्णन होता है, जिससे प्रस्तुत विषय प्रतीति व्यंग्य से होती है। इसका मन्त्र देखिए-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यन श्नन्नन्यो अभि चाकशीति॥
(ऋग्वेद-10/164/20)

अर्थात् दो सुन्दर परों वाले पक्षी, जो एक-दूसरे के साथ जुड़े साथ हैं। वे एक-दूसरे का आश्रय लिए हैं। उनमें से एक तो वृक्ष के स्वादिष्ट फल खा रहा है जबकि दूसरा उसको सामने से देख रहा है। यहाँ स्पष्ट ही है कि दो पक्षियों की चर्चा लक्षित नहीं है, संकेत कुछ और प्रस्तुति करता है और लक्षित विषय परमात्मा, जीवात्मा, व प्राकृतिक संसार भी स्पष्ट ज्ञात होता है-दो पक्षियों का जोड़ा परमात्मा व जीवात्मा का है। जो कि व्याप्य व्यापक सम्बध से जुड़ा हुआ है और यह संसार वृक्ष है।

प्रकृति वृक्षरूपी संसार के विभिन्न स्वादिष्ट भोगों को उत्पन्न करने में जुटी है। परमात्मा संसार के सुखों का भोग नहीं कर रहे, जबकि जीवात्मा ही प्राकृतिक पदार्थों का भोग कर रहा है और परमात्मा उसके प्रत्येक कर्म को अनिमिष देख रहे हैं। इस प्रकार यह अप्रस्तुत प्रशंसा है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने इस मंत्र में रूपक अलंकार कहा है। पुरानी पद्धति के अनुसार वह ठीक भी है अर्वाचीन अलंकारिकों ने अलंकारों के बहुत विभाजन कर दिये हैं।

विषम- इस अलंकार में कारण और कार्य के गुणों की विषमता - विरुद्धता को प्रस्तुत करके चमत्कार प्रस्तुत किया जाता है। जैसे कि इस मन्त्र है :-**को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था विभर्ति0 ॥**

(ऋग्वेद- १/१६४/४)

अर्थात् किसने देखा है प्रथम उत्पन्न होने वाले को, जिस अस्थि वाले को बिना अस्थि वाला धारण करता है। यहाँ आत्मा अस्थिहीन है और प्राणी अस्थियुक्त। मन्त्र का तात्पर्य है कि जीवात्मा तो प्रकृतिशून्य है सो उसमे अस्थि (हड्डी) होना सम्भव ही नहीं है। तथापि वह इस अस्थि वाले शरीर को धारण करता है और प्राणियों की इस प्रथम उत्पत्ति को किसने देखा? अर्थात किसी ने भी नहीं। यहाँ बिना अस्थि वाला कारण जीवात्मा अस्थि वाले प्राणी (कार्य) में परिवर्तित हो जाता है।

यह कारण गुणों में 'विषमता' अलंकार है और इससे जनित चमत्कार भी स्पष्ट है। वेदों में प्रयुक्त इन अलंकारिक भाषाओं अथवा चित्रित चित्रों को अज्ञानतावश लोग समझने में भूल कर गये और यही भूल अनर्थो का कारण बनी जो समाज राष्ट्र तथा मानवमात्र के लिए घातक सिद्ध हुई। वेदों तथा वैदिक कर्मकाण्डों में रूपक अलंकार का वर्णन बाहुल्यता से पाया जाता है और इसी रूपक अलंकार के कारण समाज में मत-मतान्तर, धर्म-पन्थों की जड़े इस कदर फैल गयी कि जितनी उखाड़ों उतनी बढ़ती जाती है। रूपक अलंकार का लक्षण ऊपर बता भी चुके हैं उसको थोड़ा और प्रस्तुत करते हैं- 'रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे' जहाँ निषेध रहित उपमेय पर उपमान के अभेदारोप का वर्णन हो। एक दूसरा उदाहरण और लीजिए:-

'तद्रूपकं अभेदो य उपमानोपमेययो:'

अर्थात् जहाँ उपमान और उपमेय में अभेदारोप =भेद रहित आरोप हो वह 'रूपक' अलंकार होता है। इसको इस प्रकार समझिये कि चित्रित वर्णन अथवा क्रियात्मक विधाएँ कुछ और होती है और संकेत का अर्थ कुछ और होता है। गोपथ ब्राह्मण में कहा गया है :-

परोक्ष प्रिया श्व वै देवा: प्रत्यक्ष-द्विष:।
(गोपथ ब्रा0-१/२/२१)

अर्थात्-देवलोग (विद्वान्) तो क्रियाकलाप के पीछे जो परोक्ष छिपा रहता है उसके उपासक होते है, स्थूल दृष्टि से दृश्यमान कर्मकाण्ड के नहीं। यजुर्वेद में तो रूपक अलंकार का बाहुल्यता से

वर्णन मिलता है और उसी अलंकार को शतपथ कार महर्षि याज्ञवल्क्य ने आधार बनाया है। इसका एक उदाहरण देखिए:-

'अथ कृष्णाजिमादत्ते। यज्ञस्यैव सर्व्वत्त्वाय यज्ञो ह देवेभ्योऽपचक्राम स कृष्णो भूत्वा चचार तस्य देवाऽनुविद्य त्वच मेवावच्छाया जहुः ।

तस्य यानि शुक्लनि च कृष्णानि च लोमानि नान्यूचां च साम्नां च रूपं यानि शुक्लानि तानि साम्नां रूपं यानि कृष्णानि तान्यूचां, यदि वेतरथ यान्येव कृष्णानि तानि साम्नो रूपं यानि शुक्लानि तान्यूचां यान्येव बभ्रूणीव हरीणि तानि यजुषां रूपम् ॥

(शतपथ ब्राह्मण प्रथम अंक चतुर्थ ब्रा0 २.कं)

इस सन्दर्भ में शतपथ भाष्यकार वेदों के मार्मिक विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी ने लिखा है-'सो यह कृष्णाजिन वस्तुतः ऋक, साम, यजुः, तीन विद्या रूप यज्ञ है। यह कृष्णाजिन (काले मृग की खाल) विद्यात्रयी = ज्ञान, कर्म, उपासना का ही चिह्न है, उसकी प्रतिमूर्ति है।

कण्डिका का अर्थ करते हुए स्वामी जी ने लिखा है- एक बार यज्ञ देवों को चकमा देकर भाग गया और वह कृष्ण-मृग बनकर घूमने लगा। अन्त में देवों ने उसे किसी प्रकार पकड़ लिया। वह सारा तो हाथ नहीं आया हाँ! देवों ने उसकी खाल उतारकर रख ली। उस खाल में जो श्वेत-श्वेत और काले रंग के बाल हैं वे ऋक् और साम के रूप हैं। जो श्वेत हैं वे साम के रूप हैं और जो काले हैं वे ऋक् के। चाहे तो इसे उलटा समझ लीजिए जो काले है वे साम का रूप हैं और जो श्वेत हैं वे ऋक् का, जो भूरे और हरे रंग के है वे यजुः का रूप हैं। आगे दूसरी काण्डका में और स्पष्ट करते है:-

सैषा त्रयीविद्यायज्ञः तस्याऽएतच्छिल्पमेष व्वर्णस्तद्यत्कृष्णाजिनं

भवति यज्ञस्यैव सर्व्वत्वाय तस्मात्कृष्णाजिनमधि दीक्षन्ते यज्ञस्यैव सर्व्वत्वाय तस्मदध्यवहननमधिपेषणं भवत्यस्कन्नं हविरसदिति तद्यदेवात्र तण्डुलो वा पिष्टं वा स्कन्दात्तद्यज्ञे यज्ञः प्रतितिष्ठादिति तस्मादध्यवहननमधिपेषणं भवति ॥

(शतपथ ब्रा0, प्र0 अ0, च0 ब्रा0, ३)

इस कण्डिका में महर्षि याज्ञवल्क्य के शतपथ भाष्यकार स्वामी समर्पणानन्द जी लिखते हैं- सो यह कृष्णाजिन = (कृष्ण मृग की खाल) वस्तुतः ऋक्, यजुः, साम तीन विद्या (विद्यात्रयी) का रूपक चिह्न, उसकी प्रतिमूर्ति है।

अब पाठकगण थोड़ा विचार करें। रूपक अलंकार को न समझकर कैसा-कैसा अनर्थ करते हैं कि 'शिव' जो आचार्य का रूपक भूत अलंकारिक चित्रण है उसे मृग की खाल कृष्णाजिन पहने देखकर बेचारे निस्सहाय काले मृग को मारकर उसकी खाल पहननी शुरू कर दो और वे पापी, जीव-हत्यारे अपने को तपस्वी सिद्ध करते है, हम अनेक ऋषि-मुनियों के चित्रों को देखते हैं कि वे चर्म का आसन बनाकर उस पर बैठे है, यह काल्पनिक अलंकार है जो कोई अन्य सन्देश देने की चेष्ठा करते हैं। यहाँ कृष्णाजिन का अर्थ वेदत्रयी अर्थात तीन प्रकार की विद्या का सांकेतिक चिह्न है अर्थात ऋषियों का आधार तथा उनका आवरण ज्ञान है।

देखिए इन कण्डिकाओं को स्वामी जी ने किस प्रकार खोला है। इन कण्डिकाओं में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य है- सबसे पहले तो इस बात की ओर देखिए कि चाहे काले रोम ऋक् और श्वेत को साम समझ लो और चाहे उलटा समझ लो। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि यह सब कृष्णमृग यज्ञादि की कथा काल्पनिक है, यह जो 'यदि वा इतरथा' शब्द आया कि चाहो तो उलटा समझ लो सिवाय कल्पना की सृष्टि के और कहाँ प्रयोग हो सकता है? वास्तविक सृष्टि में जो काला वो काला है और जो श्वेत है सो श्वेत है। वास्तविक सृष्टि में कोई ऐसा नहीं कह सकता कि चाहे इसे काला मान लो और उसको श्वेत और चाहे उलटा मान लो। फिर इस कण्डिका में चार बार 'रूपम्' शब्द का प्रयोग आया है, तो स्पष्ट है कि ये रूपक अलंकार का प्रयोग है।

अब प्रश्न यह है कि मृग कौन-सा है? इससे पहले ये देखिए मृगचर्म का सम्बन्ध किससे है? इसके निर्णय के लिए सूत्र-ग्रन्थ आदि की ओर न जाकर सीधा वेद का सहारा क्यों न लें। देखिए वेद क्या कहता है:-

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः कार्ष्णवसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।।

(अथर्ववेद 11/7/6)

यहां कार्ष्णं का अर्थ स्वयं सायण ने भी '**कृष्णमृगसम्बन्धि अजिनंवसानः**' ही किया है। इससे स्पष्ट है कि कृष्णाजिन का सम्बंध ब्रह्मचारी से है। अब यहाँ कृष्णाजिन में श्वेत, काले, भूरे और हरे चार प्रकार के बालों को ऋक्, यजुः, साम इन तीन विद्याओं में बांटकर स्पष्ट ही ऋग्, यजुः, साम, अथर्व इन चार वेदां को ऋग्, यजुः, साम अर्थात् गद्य, पद्य, गीत (संगीत)इन भेदों में बांटने की ओर संकेत किया है। अब हम इस प्रकार लिखे तो बात स्पष्ट हो जाएगी।

कृष्णाजिन = वेदत्रयी अर्थात् तीन विद्याएं

वेदत्रयी अर्थात् तीन विद्याएं = ज्ञान, कर्म, उपासना।

चार वेद = ब्रह्म सो 'कृष्णाजिनं वसानं = ब्रह्मचारी।

(शतपथ ब्राह्मण समर्पणानन्द भाष्य)

-आचार्य दयाशंकर

संस्कृत विभागाध्यक्ष, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

(क्रमशः)

बुजुर्गों का सम्मान करें

श्रीगोपाल बाहेती

माता-पिता जो अपनी युवावस्था में अपने बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए स्वयं को भूलकर, जी तोड़ मेहनत कर उन्हें सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाते हैं और उच्च शिक्षा के पश्चात् वे सन्तानें विदेशों अथवा देश के महानगरों में या फिर बड़े-बड़े शहरों में नौकरी, रोजगार मिल जाने पर उन्हें माता-पिता को घर पर अकेला छोड़ देते हैं हताश और एकाकी जीवन जीने के लिए। जिनकी पथराई आँखें हमेशा उनका इंतजार करती रहती हैं।

इसी प्रकार बड़े अरमानों के साथ बेटे का विवाह कर माता-पिता जिस बहू को डोली में बिठाकर लाते हैं। विवाह के कुछ समय बाद वे बेटा-बहू अपनी निजी जिन्दगी में सब कुछ भुलाकर इतना रम जाते हैं कि घर के बुजुर्ग माता-पिता उन्हें भार लगने लगते हैं और फलस्वरूप या तो वे माता-पिता को छोड़कर अलग चले जाते हैं या फिर उन्हें घर से निकल जाने को मजबूर कर देते हैं।

अति आधुनिक सोच के कारण अतिशिक्षित युवा जिनके घर में वृद्ध माता-पिता हैं, हमेशा अपने पुत्र-पुत्रियों को **चलो होमवर्क करो, इनसे क्या सीखोगे, ये पुराने लोग हैं, अपना काम करो इत्यादि** बातों द्वारा अपने-अपने माता-पिता को हतोत्साहित तथा उनकी उपेक्षा करते नजर आते हैं।

एक ओर सर्वाधिक घातक प्रवृत्ति कि जब तक माता-पिता या बुजुर्ग कमाते हैं, घर का कार्य करने में समर्थ है तब तक उनकी बड़ी आवभगत, मान-सम्मान एवं देखभाल और ज्यों ही वे वृद्ध सेवानिवृत्त अर्थात् कार्य करने में असमर्थ हुए नहीं कि वे माता-पिता सन्तानों को पर्वत से अधिक भारी लगने लगते हैं। फलस्वरूप प्रारम्भ होता है तानों, उलाहनों के माध्यम से दिन-प्रतिदिन का अपमान और उनकी सुविधाओं में कटौती का खतरनाक सिलसिला। जिससे उनका जीवन नरकीय बन जाता है।

ये चन्द वे उदाहरण मात्र हैं जो आज के दौर में हमें अपने चारों ओर वृद्धों के साथ देखने को मिलते हैं। आज के इस भौतिकवादी, आधुनिक, बाजारवाद के आधार पर विकसित भोगवादी समाज में मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक परिस्थितियों पर सर्वाधिक कुठाराघात किया है जिसकी सर्वाधिक मार घर-परिवार के बुजुर्गों को सहनी पड़ रही है।

आज अधिकांश घरों में बूढ़े माता-पिता, दादा-दादी को अकेले में अवसादित जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है। आधुनिक सुख-सुविधाओं की चाह, स्वतंत्र जीवन जीने की प्रवृत्ति ने समाज की अमूल्य धरोहर बुजुर्गों को सबकुछ होते हुए भी अनुपयोगी वस्तु (कबाड़) के समान घर में चुपचाप रहने को मजबूर कर दिया है या फिर आवाज उठाने पर घर से बाहर वृद्धाश्रमों का रास्ता दिखा दिया है। घर या वृद्धाश्रमों में एकाकी रह रहे ये बुजुर्ग शिकार हैं अपनो की उस आधुनिक भौतिकवादी सोच का जो उन्हें समाज में एक अनुपयोगी तत्त्व मानती है। अपने विकास में बाधक समझती है। वे भूल जाते हैं कि वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की एक अवश्यम्भावी प्रवृत्ति है। प्रत्येक को इस स्थिति से गुजरना पड़ेगा। यदि आज का बुजुर्ग दुर्व्यवस्था का शिकार है तो सत्य मानिए वर्तमान के युवा का भविष्य भी अंधकारमय है।

वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी मानवीय संवेदनहीनता का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक रिसर्चों ने भी स्पष्ट किया है कि 80 प्रतिशत से भी अधिक वृद्ध वृद्धाश्रम के जीवन से संतुष्ट नहीं होते हैं। पोते-पोती, बेटा-बहू, घर-परिवार के प्रति हार्दिक लगाव उन्हें निरन्तर बेचैनी देता है।

उपेक्षा नहीं सम्मान करें

ये वृद्ध परिवार से धन दौलत या भौतिक सुविधाओं की चाह नहीं रखते हैं, केवल सम्मान चाहते हैं। इनकी चाह इतनी सी है कि उन्हें अपनों का प्यार मिले। परिवार उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करें। तानों, उलाहनों से अपमानित वचनों से मुक्ति मिले। उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं किया जाए।

समझे परिवार की अवधारणा

बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन के पीछे परिवार की अवधारणा को ठीक ढंग से नहीं समझ पाना भी एक बड़ा कारण है। आधुनिक पारिवारिक अवधारणा में परिवार नाम केवल पति-पत्नी और उनके बच्चों का है। इसी कारण बेटा, बहू द्वारा जीवन में वृद्ध माता-पिता, सास-ससुर उपेक्षित कर दिये जाते हैं। जबकि परिवार की प्राचीन अवधारणा में पति-पत्नी एवं उनके बच्चों के अतिरिक्त माता-पिता, बुजुर्ग, दादा-दादी का भी समावेश है।

आज आवश्यकता है उस पुरातन धारणा को समझने की। इसे अपनाकर जब परिवार के अभिन्न अंग के रूप में बुजुर्गों को स्वीकार करने लगेंगें तो स्वत: ही इनके प्रति आपके मन में प्रेम,

स्नेह एवं सम्मान की भावना जन्म लेने लगेगी और वे उपेक्षित बुजुर्ग अपने बन जाएंगे।

संस्कारों के संवाहक है बुजुर्ग

घर-परिवार, समाज, राज्य के समृद्धिपूर्ण तथा मानव जीवन निर्माण में संस्कार का बड़ा महत्त्व होता है। बुजुर्ग ही वे होते हैं जो संस्कार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। यदि वे उपेक्षित हैं तो जानिये समाज का नैतिक विकास उपेक्षित है। स्वतंत्रता अधिकार तो वृद्धों की सेवा कर्त्तव्य है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है, अधिकार चाहता है और युवा दम्पत्ति अपने पारिवारिक जीवन में इसी स्वतंत्रता के नाम पर बुजुर्गो की अवहेलना करते हैं, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का नाम स्वतंत्रता नहीं है। उन्मुक्त जीवन विनाश की ओर ले जाता है। घर-परिवार से वृद्धों की उपेक्षा ही परिणाम है कि आज नवविवाहितों एवं अति शिक्षितों के बीच विवाह-विच्छेद के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं, अतः स्वतंत्रता के साथ घर में बुजुर्गो के महत्त्व को समझें, उनकी सेवा आपका कर्त्तव्य पालन है।

अनुभव का खजाना है वृद्धावस्था

आज समाज में वृद्धों को अनुपयोगी मानने की घातक प्रवृत्ति बढ़ रही है। हम कम्प्यूटर, इन्टरनेट से अर्जित ज्ञान को ही सर्वोच्च समझते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है कि ये आधुनिक उपकरण आपको नॉलेज दे सकते है, अनुभव नहीं। जीवन केवल नॉलेज के आधार पर नहीं जिया जा सकता, इसे जीने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है और ये अनुभव मिलता है बुजुर्गो से। क्योंकि उनके पास जीवनभर का अनुभव होता है जो आपके लिए सदैव उपयोगी है। इतिहास में अनेकों ऐसी कथाएं हैं जो ये बतलाती हैं कि बुजुर्गो के अनुभव किस प्रकार उपयोगी है। वृद्धावस्था अनुभवों का इन्साइक्लोपीडिया होती है। इसका फायदा स्वयं उठायें और अपने बच्चों को उठाने दें।

विरासत को न भूलें

आधुनिकता विरासत को भूलने का नाम नहीं है। हमारी सभ्यता और संस्कृति में वृद्धों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है उनके सम्मान एवं सेवा की बात कही गयी है। भारतीय परम्परा में पितृपूजा एवं पित्रेष्टि जैसे यज्ञों का विधान मिलता है जो माता-पिता एवं वृद्धों के प्रति कर्त्तव्यों का ज्ञापक है। शास्त्रों में कहा गया है कि नित्य प्रति माता-पिता एवं वृद्धों की सेवा एवं सम्मान करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल ये चार वस्तुएं नित्य प्रतिदिन बढ़ती हैं। मानव विधान के प्रथम निर्माता महर्षि मनु महाराज ने तो स्पष्ट लिखा है कि दुखित होकर भी माता-पिता का अपमान नहीं करना चाहिए, हमेशा उनका सम्मान करें।

वृद्धावस्था जीवन का वह काल है जिससे एक दिन प्रत्येक युवा हो रूबरू होना पड़ेगा। किसी शायर ने कहा है - **'जाकर न आने वाली जवानी देखी और आकर न जाने वाला बुढ़ापा देखा।'** इसलिए यदि आज आप वृद्धों को जैसा व्यवहार या महत्त्व देंगे, उनका सम्मान करेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रखेंगे तो मानिये आप अपना कल सुधार रहे हैं। यदि आप आज अपने वृद्धों की उपेक्षा करेंगे तो कल आपके किशोर पुत्र-पुत्रियां भी आपकी उपेक्षा करेंगे। हम मनुष्य हैं, केवल मेडिक्लेम पॉलिसी, इंश्योरेंस और पैंशन फण्ड से वृद्धावस्था नहीं गुजारी जा सकती। मानवीय संवेदनाओं की जितनी आवश्यकता जीवन की अन्य अवस्थाओं में होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में होती है। याद रखें वे केवल प्रेम, स्नेह, सम्मान चाहते हैं अतः अपने कल को बेहतर रखने के लिए आज वृद्धों को अपनाएं उन्हें सम्मान दें, सेवा करें।

संकलन- **श्रीगोपाल बाहेती** पूर्व विधायक एवं प्रधान, महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर

स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल का श्रेष्ठ उत्पाद

अविपत्तिकर चूर्ण

घटक द्रव्य : *सौंठ, पीपल, काली मिर्च, हरड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, बिड़ नमक, बायविडंग, छोटी इलायची, तेजपात, लौंग, निशोथ की जड़, मिश्री को कूटकर कपड़छन चूर्ण बनाकर रख लें।*

मात्रा और अनुपान : *3-3 ग्राम सुबह-शाम ठण्डे पानी, धारोष्ण दूध या कच्चे नारियल के जल के साथ लें। यदि आवश्यकता हो तो रात को सोते समय भी ले सकते हैं।*

गुण एवं उपयोग : *अम्लपित्त और शूल रोग में पहले इस चूर्ण से विरेचन कराकर पीछे से अन्य दवायें देने में अच्छा लाभ होता है। यह पैत्तिक विकारों के लिए बहुत उपयोगी है। अम्लपित्त में पित्त की विकृति से ही यह रोग बढ़ता है। उस विकृति को दूर करने के लिए इस चूर्ण का उपयोग किया जाता है। यह विरेचन होने के कारण दस्त भी साफ लाता है और कब्जियत दूर करता है। इस चूर्ण के सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त होती है।*

संस्कृत और संस्कृति को संजोते गांव

रामबीर शास्त्री

संस्कृत संस्कार देने वाली भाषा है। अत: उसके नित्य उच्चारण से व्यक्ति के जीवन जीने की शैली अधिक भारतीय हो जाती है, उच्च आदर्शों के निकट पहुँचने में सहायक बनती है। आज देश में ऐसे अनेक गाँवों में लोगों की आपसी बोलचाल की भाषा संस्कृत बन चुकी है। इन गाँवों में दैनिक जीवन का सम्पूर्ण वार्तालाप सिर्फ संस्कृत में ही किया जा रहा है। ऐसे ग्रामों में सबसे महत्त्वपूर्ण नाम है कर्नाटक के मुत्तुरु व होसहल्ली और मध्य प्रदेश के झिरी गाँव का, जहाँ सही अर्थों में संस्कृत जन-जन की भाषा बन चुकी है। इन ग्रामों में लगभग 95 प्रतिशत लोग संस्कृत में ही वार्तालाप करते हैं। मुत्तुरु, होसहल्ली व झिरी के अलावा मध्य प्रदेश के मोहद और बधुवार तथा राजस्थान के गनोडा भी ऐसे ग्राम हैं जहाँ दैनिक जीवन का अधिकांश वार्तालाप संस्कृत में ही किया जाता है। सिर्फ एक-दूसरे का हालचाल जानने के लिए ही नहीं बल्कि खेतों में हल चलाने, दूरभाष पर बात करने, दुकान से सामान खरीदने और यहाँ तक कि नाई की दुकान पर बाल कटवाते समय भी संस्कृत में ही वार्तालाप देखने को मिलता है।

लोगों के घरों में रसोईघर में रखे मसालों व अन्य सामान के डिब्बों पर नाम संस्कृत में ही लिखे मिलते हैं। इन ग्रामों में अब यह कोई नहीं पूछता कि संस्कृत सीखने से उन्हें क्या फायदा होगा? इससे नौकरी मिलेगी या नहीं? संस्कृत अपनी भाषा है और इसे हमें सीखना है, बस यही भाव लोगों के मन में है।

1. कर्नाटक का मुत्तुरु ग्राम

मुत्तुरु ग्राम कर्नाटक के शिमोगा शहर से लगभग 10 किमी.दूर है। तुंग नदी के किनारे बसे इस ग्राम में संस्कृत प्राचीन काल से ही बोली जाती है लेकिन आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप इसे संवारा है संस्कृत भारती ने। लगभग 2000 की जनसंख्या और 250 परिवारों वाले इस ग्राम में प्रवेश करते ही सबसे पहला सवाल जो आपसे पूछा जाएगा वह होगा-'भवत: नाम किम्?' (आपका नाम क्या है?) 'कॉफी चायं वा किम् इच्छति भवान्? (काफी या चाय, क्या पीने की इच्छा है?) हैलो के स्थान पर 'हरि ओ३म्' और 'कैसे हो' के स्थान पर 'कथम् अस्ति?' का ही उच्चारण यहाँ सुनने को मिलता है।

यहाँ बच्चे, बूढ़े, युवा और महिलाएं- सभी बहुत ही सहज रूप से संस्कृत में बात करते हैं। ग्राम के मुस्लिम परिवारों में भी संस्कृत उतनी ही सहजता से बोली जाती है जितनी हिन्दू घरों में। मुस्लिम बालक कहीं भी संस्कृत में श्लोक गुनगुनाते मिल जाएंगे। यहाँ तक कि क्रिकेट खेलते हुए और आपस में झगड़ते हुए भी बच्चे संस्कृत में ही बात करते हैं।

ग्राम के सभी घरों की दीवारों पर लिखे हुए बोध वाक्य संस्कृत में ही हैं। ऐसा ही एक बोधवाक्य है-**'मार्गे स्वच्छता विराजते। ग्रामे सुजनाः विराजते।'** अर्थात् सड़क पर स्वच्छता होने से यह पता चलता है कि गाँव में अच्छे लोग रहते हैं। कुछ घरों के बाहर स्पष्ट शब्दों में लिखा हुआ है कि 'इस घर में आप संस्कृत में वार्तालाप कर सकते हैं।' यह संकेत वास्तव में बाहर से आने वाले लोगों के लिए है, गाँव वालों के लिए नहीं।

इस गाँव में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत में होती है। बच्चों को छोटे-छोटे गीत संस्कृत में सिखाये जाते हैं। चंदा मामा जैसी छोटी-छोटी कहानियाँ भी संस्कृत में ही सुनाई जाती हैं। बात सिर्फ छोटे बच्चों की ही नहीं है, गाँव के उच्च शिक्षा प्राप्त युवक प्रदेश के बड़े शिक्षा संस्थानों व विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ा रहे हैं और कुछ साफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में बड़ी कंपनियों में काम कर रहे हैं। इस ग्राम के 150 से अधिक युवक व युवतियाँ 'आईटी इंजीनियर' हैं और बाहर काम करते हैं। विदेशों से भी अनेक व्यक्ति यहाँ संस्कृत सीखने आते हैं।

2. उत्तर प्रदेश के बागपत जिले का बावली ग्राम

संस्कृत सीखने के लिए व्यक्ति का पढ़ा-लिखा होना आवश्यक नहीं है। बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति भी संस्कृत सीख सकता है। ऐसे हजारों लोग हैं जिन्हें पहले बिल्कुल भी अक्षर ज्ञान नहीं था लेकिन अब वे संस्कृत की अच्छी समझ रखते हैं। अब तो ऐसे लोग अन्य लोगों को भी संस्कृत सिखा-पढ़ा रहे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है - उत्तर प्रदेश के बागपत जिले का बावली ग्राम। यहाँ के 50 वर्षीय जयप्रकाश कभी स्कूल नहीं गये, लेकिन संस्कृत भारती के संभाषण वर्गो से संस्कृत सीखकर वे न केवल अब फर्राटेदार संस्कृत बोलते हैं बल्कि अपने ग्राम के 25 से अधिक युवकों व प्रौढ़ों को संस्कृत सिखा रहे हैं।

3. मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले का मोहद ग्राम

मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले के मोहद ग्राम की आबादी लगभग 3500 है। यहाँ भी एक हजार से अधिक लोग संस्कृत में वार्तालाप करते हैं। इस ग्राम में संस्कृत भारती के कई शिविर आयोजित हो

पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा 'पॉलिथीन'

राहुल आर्य

प्लास्टिक की थैलियाँ, प्लास्टिक से बनी वस्तुएँ हमारी जीवनशैली में इस कदर घुल-मिल गई हैं कि उनके बिना हमारे जीवन की कल्पना नहीं होती, कहीं न कहीं वे हमारे जीवन की व रोजमर्रा की सहूलियतों में काम आती हैं। इस तरह देखा जाए तो प्लास्टिक ने हमें कई सुविधाएँ तो दी है लेकिन इसके कारण हमारे पर्यावरण को भी काफी नुकसान हो रहा है। प्लास्टिक बैग के कारण प्रदूषित जहरीले कचरे के रूप में धरती पर विद्यमान है।

आज हर कोई प्लास्टिक से पर्यावरण और हमारे जीवन पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों की बात करता है लेकिन मजबूरी यह है कि किसी को इसका ठोस विकल्प नहीं सूझ रहा है। प्लास्टिक से जुड़ा हुआ सबसे खतरनाक पहलू यह है कि जितनी देर इससे बनी हुई चीजें इस्तेमाल में लाई जाती है, उसके मुकाबले सैकड़ों गुना ज्यादा वक्त इनके नष्ट होने में लगता है। आंकड़ों के अनुसार देश के 60 बड़े शहर रोजाना 3500 टन से अधिक प्लास्टिक-पॉलिथीन कचरा निकाल रहे हैं।

कई वर्ष पहले दिल्ली के गाजीपुर में कूड़े के पहाड़ का एक बड़ा हिस्सा खिसका और करीब बहने वाले गंदे नाले में इतनी गति से गिरा कि कई गाड़ियों और लोगों को अपने साथ बहाकर ले गया। दिल्ली में अभी तक करीब दो करोड़ टन कचरा जमा हो चुका है और हर दिन आठ हजार टन कूड़ा पैदा हो रहा है, जिसमें से एक हजार टन प्लास्टिक का लाइजाल कचरा होता है और इसके निस्तारण के लिए अब जमीन भी कहीं नहीं बची है। इसके लिए मौजूदा लैंडफिल साइट डेढ़-सौ फीट से ऊंची हो गई है और उस पर अब और अधिक कचरा नहीं डाला जा सकता। हालांकि गाजीपुर में आफत बने कूड़े से राष्ट्रीय राजमार्ग बनाने का काम होगा, लेकिन यह कूड़े के निस्तारण का सम्पूर्ण समाधान नहीं है। एक सर्वे के अनुसार देश में प्रतिवर्ष लगभग 1.1 करोड़ टन प्लास्टिक की खपत हुई, जिसके आधार पर जानकारी मिली कि दिल्ली, चेन्नई, मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद जैसे बड़े शहर सर्वाधिक प्लास्टिक कचरा पैदा कर रहे हैं।

प्लास्टिक-पॉलिथीन से बनी दूध व पानी की बोतलें, लंच बॉक्स या डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों का सेवन करने से मनुष्य के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचता है, क्योंकि गरमी, धूप आदि कारणों से रासायनिक क्रियाएं प्लास्टिक के विषैले प्रभाव उत्पन्न करती हैं, जो कैंसर आदि तमाम बीमारियाँ पैदा कर सकती हैं। प्लास्टिक से

संस्कृत और संस्कृति को... पृष्ठ 17 का शेष

चुके हैं जिनमें स्कूलों के बच्चे ही नहीं गाँव की अनपढ़ व कम पढ़ी-लिखी महिलाएं भी संस्कृत में वार्तालाप करती हैं। मोहद ग्राम पंचायत की ओर से ही विशेष प्रयास करके संस्कृत सीखने और सिखाने का काम होता है। यहाँ संस्कृत समाज के किसी वर्ग विशेष या जाति विशेष की भाषा नहीं है बल्कि कथित वंचित घरों में भी उतने ही सम्मान और गौरव की अनुभूति के साथ बोली जाती है जितनी कथित उच्च परिवारों में।

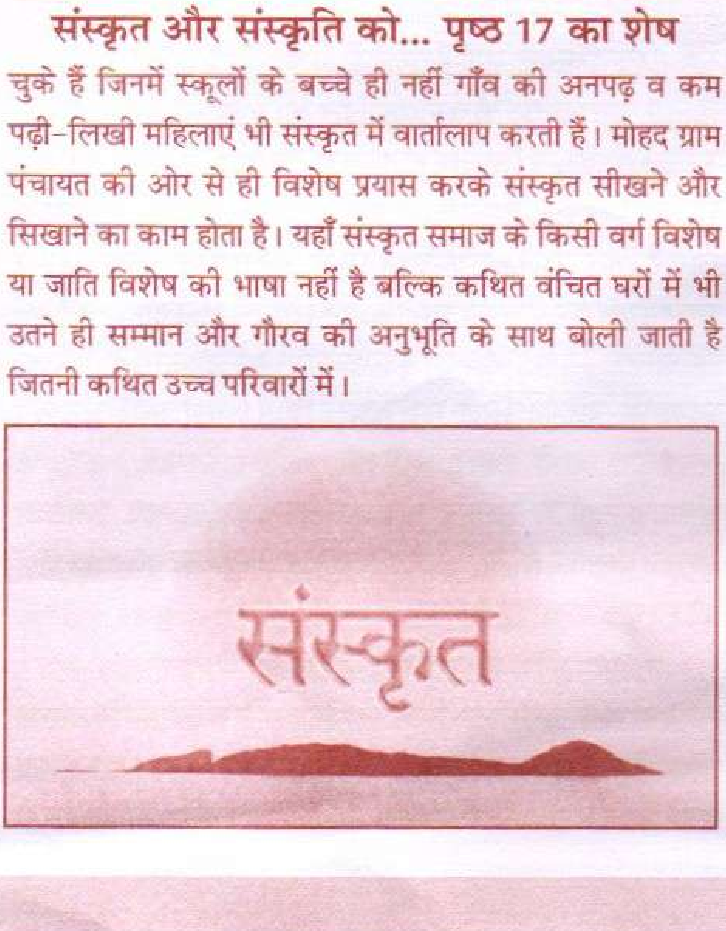

4. मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले का झिरी ग्राम

झिरी (जिला राजगढ़, मध्य प्रदेश) कोई सामान्य ग्राम नहीं है। यह उत्तर भारत का ऐसा दिव्य ग्राम है जहाँ समस्त ग्रामवासी संस्कृत में वार्तालाप करते हैं। यहाँ तो खेतों में हल चलाने वाला किसान भी अपने बैलों को संस्कृत में ही आदेश देता है और बैल उसके आदेश का पालन भी करते हैं।

5. राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले का गनोडा ग्राम

गनोडा ग्राम अनुसूचित जनजाति का गाँव माना जाता है और राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में स्थित है। इस ग्राम में संस्कृत धीरे-धीरे सबकी जीवनशैली का अंग बनती जा रही है। विद्यालयों में जाने वाले लगभग सभी छात्र कुछ-कुछ संस्कृत वाक्यों को बोलते ही हैं। ग्राम की मूल भाषा वागदी है जिसका स्थान अब संस्कृत ले रही है। इन छोटे छोटे गाँवों के अनपढ़ और कम पढ़े-लिखे लोगों ने सिद्ध कर दिया है कि संस्कृत मात्र पंडितों की ही भाषा नहीं है, बल्कि यह तो लोगों के हृदय में बसी हुई है और हमारी गौरवशाली संस्कृति की प्रतीक है।

संकलन- **रामबीर शास्त्री**
संस्कृत विभाग, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

बने डिस्पोजल बरतनों, कप-प्लेटों में खाना व पेय पदार्थ कुछ समय तक रखे रहने से रासायनिक क्रियाएं होती हैं जिनसे वे खाद्य पदार्थ विषैले हो जाते हैं।

प्लास्टिक में अस्थिर प्रकृति का जैविक कार्बनिक एस्सटर (अम्ल और एल्कोहल से बना घोल) होता है जो कैंसर पैदा करने में सक्षम है। सामान्य रूप से प्लास्टिक को रंग प्रदान करने के लिए उसमें कैडमियम और जस्ता जैसी विषैली धातुओं के अंश मिलाए जाते हैं, जब ऐसी रंगी प्लास्टिक से बनी थैलियों, डिब्बों या अन्य पैकिंगों में खाने-पीने के सामान रखे जाते हैं तो ये जहरीले तत्त्व धीरे-धीरे उनमें प्रवेश कर जाते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि कैडमियम की अल्प मात्रा हमारे शरीर में यानि पेट में जाने से उल्टियाँ हो सकती हैं, हृदय का आकार बढ़ सकता है। इसी प्रकार यदि जस्ता नियमित रूप से शरीर में पहुँचता रहे तो मानव मस्तिष्क के ऊतकों का क्षरण होने लगता है, जिससे अल्जाइमर जैसी बीमारियाँ हो सकती है।

जहाँ तक प्लास्टिक की रोकथाम व इसे चलन से बाहर करने का प्रश्न है, तो यह अभी तक संभव नहीं हो पाया है। पिछले एक दशक से कई तरह के सीरप, टॉनिक और दवाएँ- प्लास्टिक पैकिंग में बेची जाने लगी है, इसका कारण यह है कि ये शीशियाँ और बोतलें सस्ती पड़ती हैं। इनके टूटने का भी खतरा नहीं होता। हालांकि केन्द्र सरकार ने एक अधिसूचना जारी करके दवाओं को प्लास्टिक से बनी शीशियों व बोतलों में पैक करने पर रोक लगाने का प्रयास किया था मगर उसका भी कोई व्यापक असर नहीं हुआ। इस चेतावनी के बावजूद दवा उद्योग इसके लिए राजी नहीं हैं क्योंकि इससे उनके कारोबार पर बुरा असर पड़ सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि प्लास्टिक बोतलों में पाए जाने वाले खास तत्त्व जैसे-थैलेट्स हमारी सेहत पर प्रतिकूल असर डालते हैं। इनकी वजह से हॉर्मोनों का रिसाव करने वाली ग्रंथियों की क्रिया-प्रणाली बिगड़ सकती है।

हमारी आधुनिक जीवनशैली में प्लास्टिक कचरा दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है लेकिन इसके निस्तारण के तरीके नहीं खोजे जा रहे। जैसे कुछ वर्ष पहले तक स्याही वाला फाउंटेन पेन होता था, इसके बाद ऐसे बॉल पेन बाजार में आए जिनकी केवल रिफिल बदलती थी लेकिन आज बाजार में ऐसे पेन चलन में आ गये हैं जो स्याही खत्म होने पर फेंक दिए जाते हैं। बढ़ती साक्षरता के साथ ऐसे पेनों का इस्तेमाल बढ़ता गया और साथ ही उनका कचरा भी बढ़ता गया।

आँकड़ों की दृष्टि से देखें तो तीन दशक पहले एक व्यक्ति साल में मुश्किल से एक पेन खरीदता था, लेकिन आज प्रति व्यक्ति औसतन एक दर्जन पेन की खपत हर वर्ष होती है। इसी तरह शेविंग

किट में पहले स्टील या उससे पहले पीतल का रेजर होता था, जिसमें केवल ब्लेड बदले जाते थे लेकिन आज कचरा बढ़ाने के लिए 'यूज एंड थ्रो' प्लास्टिक के रेजर ही बाजार में मिलते हैं। कुछ वर्ष पहले तक दूध भी कांच की बोतलों में आता था या फिर लोग अपने बरतन लेकर डेयरी जाते थे। आज पीने का पानी भी कचरा बढ़ाने वाली प्लास्टिक बोतलों में मिल रहा है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या प्लास्टिक का इससे बेहतर या इसके समकक्ष विकल्प हो सकता है? इस बारे में अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. रोलैंड गेयेर का कहना है कि यह दुनिया बहुत तेजी से 'प्लास्टिक प्लैनेट' बनने की ओर अग्रसर है। ऐसे में बेहतर विकल्प यह है कि लोग प्लास्टिक के बजाए प्राकृतिक चीजों से बनी चीजों का उपयोग करने की आदत डालें। हालाँकि प्लास्टिक पर अधिक से अधिक पाबंदी भी इसका एक उपाय है लेकिन सुविधाजनक प्लास्टिक के आगे यह पाबंदी ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाती। ऐसे में बेहतर उपाय यही है कि लोग स्वयं ही प्लास्टिक से होने वाले नुकसान को समझें और इसके विकल्पों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित हों।

अनुमानतः देश में प्रतिदिन चार करोड़ दूध की थैलियाँ और दो करोड़ पानी की बोतलें कूड़े में फेंकी जाती हैं। इसके साथ ही मेकअप का सामान, डिस्पोजल बरतनों का प्रचनल, बाजार से पॉलिथीन की थैलियों में आता सामान, हर छोटी-बड़ी चीज की पैकिंग ऐसे न जाने कितने तरीकें हैं जिनसें हम अपने आसपास प्लास्टिक का कूड़ा बढ़ा रहे हैं। इसलिए जरूरी यह है कि प्लास्टिक का कूड़ा कम करने के ठोस प्रयास हों। इसके लिए केरल के कन्नूर जिले से सीख ली जा सकती है। यहाँ के लोगों ने बॉल पेन का इस्तेमाल पूर्णतया बंद कर दिया है, क्योंकि इससे हर दिन लाखों रिफिल का कूड़ा निकलता था। पूरे जिले में कोई भी दुकानदार पॉलिथीन की थैली या प्लास्टिक के डिस्पोजल बरतन न तो बेचता है और नही इस्तेमाल करता है। इसी तरह के प्रयोग प्लास्टिक कचरे की समस्या का समाधान कर सकते हैं।

संकलन- **राहुल आर्य**
कोषाध्यक्ष, महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर

परम् हितैषी परमेश्वर

मनमोहन आर्य

यदि हम विचार करें कि संसार में हमारे प्रति सर्वाधिक प्रेम, दया, सहानुभूति कौन रखता है, कौन हमारे प्रति सर्वाधिक संवेदनशील, हमारे सुख में सुखी व दु:ख आने पर उसे दूर करने वाला, हमारे प्रति दया, कृपा व हित की कामना करने वाला है, तो हम इसके उत्तर में अपने माता-पिता, आचार्य और परमेश्वर को सम्मिलित कर सकते हैं। इसमें कहीं कोई अपवाद भी हो सकता है। हम जब इस प्रश्न पर विचार करते हैं तो हमें मनुष्य व मनुष्य शरीर में निवास कर रही जीवात्मा का सर्वाधिक हितैषी जो इसे प्रेम करने के साथ इस पर मित्रभाव रखकर असीम दया व कृपा करता है, वह सत्ता एकमात्र परमेश्वर ही है।

अत: हमें उसके प्रति उसी के अनुरूप भावना के अनुसार प्रेम, मित्रता व कृतज्ञता का व्यवहार करना चाहिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे, संसार में अधिकांश अज्ञान व अन्य कारणों से ऐसा ही करते हैं, तो हम कृतघ्न होंगे जिस कारण हमें जन्म-जन्मान्तरों में अपने इस मूर्खतापूर्ण आचरण व व्यवहार की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। अत: हमें अपने इस जीवन में प्रतिदिन समय निकाल कर इस प्रश्न पर अवश्य विचार करने के साथ इसका समाधान खोजना चाहिये।

पहला प्रश्न है कि ईश्वर हमारा परम हितैषी किस प्रकार से है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें ईश्वर व आत्मा के स्वरुप को जानना होगा। ईश्वर का स्वरूप हम आर्यसमाज के पहले व दूसरे नियम को पढ़ व समझकर जान सकते हैं। पहला नियम है कि 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।' दूसरा नियम है कि 'ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।'

पहले नियम में समस्त विद्या व समस्त सांसारिक पदार्थो, सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व पृथिवीस्थ सभी पदार्थों, का आदि मूल परमेश्वर को कहा गया है। जहां तक विद्या का प्रश्न है, यह परमेश्वर में सदा सर्वदा अर्थात् अनादिकाल से विद्यमान है। इस विद्या का मनुष्यों के लिए जो उपयोगी भाग है उसे ईश्वर बीज रुप में चार वेदों के माध्यम से सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों द्वारा प्रदान करता है। वेदों के मन्त्रों में जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध हैं, उनका अर्थ व उदाहरणों सहित ज्ञान भी परमेश्वर उन ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को कराता है।

अत: मनुष्यों को प्राप्त होने वाली समस्त विद्याओं का आदि मूल परमात्मा ही निश्चित होता है जिसका आधार वेद है। मनुष्य समय-समय पर अपने ऊहापोह व चिन्तन-मनन आदि कार्यों से उसका विस्तार कर उससे लाभ लेने के लिए नाना प्रकार के सुख-सुविधाओं के साधन आदि बनाते रहते हैं। हमें लगता है कि मनुष्य तो केवल अध्ययन, चिन्तन-मनन व पुरुषार्थ करते हैं परन्तु उनके मस्तिष्क में जो नये विचार व प्रेरणायें होती हैं वह ईश्वर के द्वारा उनके पुरुषार्थ आदि के कारण होती हैं। इसी प्रकार से ज्ञान-विज्ञान का विस्तार होकर आज की स्थिति आई है।

आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्य व यथार्थ स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। यह सब बातें वेदों के आधार पर निश्चित की हुई हैं। वेदों में इनका यत्र-तत्र वर्णन पाया जाता है। इसमें हम यह भी जोड़ सकते हैं कि जीवात्मा को उसके जन्म-जन्मान्तरों के अवशिष्ट कर्मों का सुख-दु:खरूपी फल प्रदान करने के लिए ही ईश्वर इस सृष्टि को बनाकर उसमें मनुष्यों व अन्य प्राणियों को उत्पन्न करते हैं। मनुष्य व इतर प्राणी योनियां भी जीवात्मा के पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर ही उन्हें परमेश्वर से प्राप्त होती हैं।

ईश्वर ने जीवात्माओं के लिए इस सृष्टि को बनाया, आदि सृष्टि में वेदों का ज्ञान देकर मनुष्यों को उनके कर्तव्य-अकर्तव्य व धर्म-अधर्म से परिचित कराया और जीवात्मा को जन्म देकर उन्हें नाना व विविध प्रकार के सुखों से पूरित किया, इन व ऐसे अनेक उपकारी कार्य करने के लिए ईश्वर सभी जीवात्माओं व मनुष्यों का परम हितकारी व हितैषी सिद्ध होते हैं। जीवात्मा का स्वरुप भी वेदों में तर्कपूर्ण शब्दों में बताया गया है जो कि अनादि, अविनाशी, अनुत्पन्न, अमर, नित्य, सूक्ष्म, अल्पज्ञ, एकदेशी, जन्म-मरण वा सुख-दु:खरूपी कर्म-फल के बन्धनों में बन्धा हुआ है। असत्य व अधर्म का पूर्णत: त्याग कर जीवात्मा जन्म-मरण के बन्धनों से छूट कर मुक्ति को प्राप्त करता है।

मनुष्य का शरीर संसार के सभी प्राणियों के शरीरों में सर्वोत्तम है। इसकी रचना अद्‌भुत है। मनुष्य वा अन्य प्राणियों के शरीरों की रचना का कार्य ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता। आईये, इस मानव शरीर का वर्णन भी ऋषि दयानन्द के शब्दों में देख लेते हैं। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम् समुल्लास में ऋषि दयानन्द

लिखते हैं कि 'प्रलय की अवधि समाप्त होने के बाद' जब सृष्टि का समय आता है तब परमात्मा (सत्व, रज व तम गुणों वाली कारण प्रकृति के) परमसूक्ष्म पदार्थों को इकट्ठा करता है।

उसको प्रथम अवस्था में जो परमसूक्ष्म प्रकृतिरूप कारण से कुछ स्थूल होता है उस का नाम महत्व और जो उससे कुछ स्थूल होता है उसका नाम अहंकार और अहंकार से भिन्न-भिन्न पांच सूक्ष्मभूत: श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण पांच ज्ञानेन्द्रियां, वाक्, हस्त, पाद, उपस्थ, और गुदा ये पांच कर्म-इन्द्रियां हैं और ग्यारहवां मन कुछ स्थूल उत्पन्न होता है। और उन पंचतन्मात्राओं से अनेक स्थूलावस्थाओं को प्राप्त होते हुए क्रम से पांच स्थूलभूत जिन को हम लोग प्रत्यक्ष देखते हैं उत्पन्न होते हैं। उन से नाना प्रकार की औषधियां, वृक्ष आदि, उनसे अन्न, अन्न से वीर्य और वीर्य से शरीर होता है परन्तु आदि सृष्टि मैथुनी (स्त्री-पुरुष संसर्ग द्वारा) नहीं होती क्योंकि जब स्त्री पुरुषों के शरीर परमात्मा बना कर उनमें जीवों का संयोग कर देता है तदनन्तर मैथुनी सृष्टि चलती है।'

इसी क्रम में ऋषि दयानन्द आगे लिखते हैं कि 'देखो ! (ईश्वर ने) शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत्, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन, रुधिरशोधन, प्रचालन, विद्युत् का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप मूलरचन, लोम, नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिये स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल, स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को विना परमेश्वर के कौन कर सकता है?'

इस प्रकार ईश्वर ने मनुष्य का शरीर बनाकर हम पर जो उपकार किया है, उसका हम किसी प्रकार से भी प्रतिकार वा ऋण, उसकी दया, कृपा आदि से उऋण नहीं हो सकते। हम ईश्वर के इन सब उपकारों के लिए कृतज्ञ हैं और यही भाव जीवन भर बना कर रखें तभी हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी हो सकते हैं। कृतघ्न मनुष्य को मनुष्य नहीं कहा जा सकता। इतना ही नहीं, वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन कर हम अपनी इस मनुष्य योनि में संसार के यथार्थ स्वरूप को जान सकते हैं व अर्जित ज्ञान से ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ सहित परोपकार, सेवा, दान आदि कार्यों को करके जन्म-मरण के दु:खों से मुक्त हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त वैदिक जीवन का अवलम्बन कर हम मुक्ति को प्राप्त कर 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक बिना जन्म व

मृत्यु के ईश्वर के सान्निध्य को प्राप्त कर उसके आनन्द का भोग कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन के उदहारण से मनुष्यों को धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की शिक्षा दी और इसके साथ सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ लिख कर मोक्ष के सभी साधनों पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। मोक्ष के साधनों को व्यवहार में लाना असम्भव नहीं तो कुछ असुविधाजनक तो है ही, इसी को धर्म व तप कहते हैं और यही हमारे भावी जन्म को सुधारने के साथ हमें मोक्ष की ओर अग्रसर करता है।

मोक्ष में असीम सुख प्राप्त करना ही प्रत्येक जीवात्मा का लक्ष्य है। यह भी एक तथ्य है कि हम सभी जीवात्मायें अनेक बार मोक्ष में रहे हैं और इसके अतिरिक्त अनेक बार अधर्म के कार्य करके नाना व प्राय: सभी पाप योनियों में रहकर हमने अनेक दु:खों को भी भोगा है। हमें यह भी जानना है कि माता-पिता और आचार्य हमारे मित्रवत् हितकारी एवं कृपालु हैं परन्तु इन्हें प्रदान कराने वाला भी वही एक ईश्वर है। यह लोग भी हमारी ही तरह ईश्वर के कृतज्ञ हैं। अत: हम इन सभी के भी ऋणी हैं परन्तु ईश्वर का ऋण सबसे अधिक है। हमें इन सबके ऋणों से उऋण होने के लिए प्रयास करने हैं।

ईश्वर का सत्य स्वरुप वेद, वैदिक साहित्य व महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में वर्णित है। इसे पढ़कर ईश्वर के यथार्थ स्वरूप और उसके गुण-कर्म-स्वभाव को विस्तार से जाना जा सकता है। इससे ईश्वर की जीवों पर दया, कृपा व हित की कामनाओं के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करके उसकी स्तुति, प्रार्थना उपासना आदि के द्वारा अपने जीवन को उन्नत बनाने के साथ भावी जन्मों में सुखों की प्राप्ति के लिए धर्म व सुखदायक कर्मों की पूंजी संचित की जा सकती है जो जन्म जन्मान्तरों में हमें मोक्ष प्रदान करा सकती है।

आईये! ईश्वर की दया, कृपा व हितकारी भावना के प्रति अपनी नित्यप्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए वेद एवं वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय सहित ईश्वर की ऋषियों के विधान के अनुसार स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने का संकल्प लेकर उसे अपने जीवन में चरितार्थ करें। इसी से हमारा मानव जीवन सफल हो सकता है। जीवन की उन्नति का इससे अधिक उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

- **मनमोहन आर्य** 196, चुक्खुवाला, देहरादून

ये कैसा विकास?

जसविन्द्र आर्य

विकास शब्द की परिभाषा क्या है? प्रकृति से संस्कृति की ओर जाना तो विकास है पर विकृति की ओर जाना भी विकास ही है क्या? पोषक बनना तो विकास है पर शोषक बनना भी विकास है क्या? पूरक, सहयोगी, दयावान, करुणावान, प्रज्ञावान बनना तो विकास है परन्तु छीनना, लूटना, उत्पीड़न व आतंकित करना, हिंसक व संवेदनहीन बनना भी विकास है क्या? प्राकृतिक सम्पदा का सदुपयोग करना तो विकास है परन्तु अतिभोग के द्वारा दुरुपयोग करना भी विकास है क्या? खास तौर पर मानसिक तनाव का बढ़ना भी विकास है क्या?

आज करोड़ों लोगों से धरती, पानी, हवा, कुदरत की अनमोल चीजें छिनती जा रही हैं। क्या इसे ही विकास कहते हैं? क्या इसे ही लोकतंत्र (लोगों का, लोगों के लिए, लोगों के द्वारा) कहते हैं? क्या इसके लिए ही अनेक वैज्ञानिकों ने अपना सारा जीवन लगा दिया, क्या इसके लिए ही शहीदों ने कुर्बानियाँ दीं? क्या इसी के लिए आजादी पायी थी? महापुरुषों ने कहा था कि आजादी का मतलब है कि एक ऐसी व्यवस्था का बनना जिसमें अंतिम व्यक्ति को जीवन की मूल आवश्यकताएं सम्मान के साथ मिलेंगी तथा हर व्यक्ति को मानव के रूप में जीने का अवसर उपलब्ध होगा।

आज पर्यावरण का संकट पूरी सभ्यता के लिए खतरा बन गया है। क्या इसमें कोई बचेगा? विज्ञान व तकनीकी का मकसद तो व्यक्ति को सहयोग देना व सुखी करना था पर नासमझी के कारण बन गये आतंक के अड्डे। स्थूल हिंसा करने वाले तो जब आएंगे तक आएंगे, शरीर तो एक दिन मरेगा ही परन्तु यहाँ तो व्यक्ति पल-पल मर रहा है। मानसिक हिंसा हर पल हो रही है उसमें व्यक्ति, परिवार, समाज सबकुछ छिनता जा रहा है, साथ ही कुदरत की अनमोल देन हवा, पानी, धरती भी छिन रही है। क्या यही है विकास? **जगह-जगह** लिखा होता है कि किसी पर विश्वास न करें, अपने आस-पास देख लों कहीं बम तो नहीं, जहरीली नशीली वस्तु तो खाने में नहीं मिला दी। क्या हो गया है व्यक्ति को। कुल मिलाकर आदमी का आदमी, परिवार, समाज व प्रकृति पर अविश्वास और हम कह रहे हैं विकास चाहिए।

कैसा विकास? जिस विकास और आधुनिकता की अंधी दौड़ में आदमी, आदमी ही नहीं रहा। विश्वास ही नहीं बचा तो विकास का क्या मतलब? देख लो, देश से लेकर दुनिया तक, परिवार से लेकर समाज तक कितना भय व तनाव है, कितना डरा हुआ है आदमी-आदमी से, इसलिए विकास की बात करते समय क्या हमें इन बिन्दुओं पर नहीं सोचना चाहिए। नहीं है चर्चा कहीं पर भी पूरी शिक्षा प्रणाली में, घरों में माता पिता के पास और गलती से किसी युवा के अन्दर यह सवाल उठ जाए कि मैं कौन, मेरा प्रयोजन क्या और मेरी भूमिका क्या होनी चाहिए?

मानव के रूप में तो माता-पिता को डर लगने लगता है कि कहीं बच्चा रास्ता तो नहीं भटक गया है क्योंकि सबको एक ही विकास के बारे में पता है कि अधिक से अधिक साधन कैसे प्राप्त हों। बैंक-बैलेंस कैसे बढ़े। कितना बढ़े और क्यों बढ़े नहीं मालूम, बस बढ़ना चाहिए। सभी की एक ही सोच बनती जा रही है, सभी बढ़ाने में लगे हुए हैं। ज्ञानी, विज्ञानी और अज्ञानी - तीनों खड़े है लाइन में। फिर बताओ तनाव, भय, युद्ध, आतंक व हिंसा होगी या नहीं और कौन रोकेगा इसे?

आखिर क्यों बनाई जा रही है ऐसी व्यवस्था जिसमें मुठ्ठी भर लोग अरबपति से खरबपति बनते जा रहे हैं व करोड़ों लोगों से कुदरत की अनमोल चीज पानी तक भी छिनता जा रहा है। पानी खरीद कर पीना विकास है या विनाश? कुछ लोग हवा, पानी, धरती जैसी कुदरत की अनमोल चीजों को भी जहरीला बनाकर अपने आपको अपराधी नहीं मान रहे। विचार कीजिए हवा, पानी, हमारे अनाज, फल, सब्जियों और वातावरण को किसने जहरीला बनाया है? विकसित कहे जाने वाले लोगों ने या फिर जिनको हम अविकसित कहते हैं उन्होंनें?

प्रिय पाठकों, क्या है विकास जो हमें सुख व समृद्धि की तरफ ले जाने के अर्थ में था, वही आज हमें पल-पल मारने के अर्थ में, बोझ बन गया मानवता पर। शिक्षा, चिकित्सा, न्याय व चुनाव के आधुनिक तन्त्र ने बांट दिया आदमी को, मार दिया इन्होंने मानवता को, बहुत पीछे छोड़ दिया इन्होंने इतिहास के जालिमो को क्योंकि पहले जालिमों की मारने-काटने की सीमा थी पर अब तो विज्ञान व तकनीकी के कारण बटन दबाओ और सबकुछ स्वाहा। इसलिए विचार कीजिए कि विकास क्या? उसकी दशा व दिशा क्या होनी चाहिए? तभी जाकर मानव जाति का प्रयोजन व भूमिका पूरी होगी, नहीं तो कहीं विकास के भूत से अन्जाने में सर्वनाश न कर बैठे।

संकलन:-**जसविन्द्र आर्य**
युवा भजनोपदेशक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

इंडो-जर्मन बायोडायवर्सिटी प्रोजेक्ट के तहत

गुरुकुल पहुंची कृषि मंत्रालय व जर्मन अधिकारियों की टीम

कुरुक्षेत्र (राजीव कुमार)-कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली से 16 सदस्यों का एक दल गत माह गुरुकुल पहुंचा जहां पर उन्होंने न केवल प्राकृतिक खेती का जायजा लिया बल्कि गुरुकुल की अत्याधुनिक गोशाला का भी अवलोकन किया। इस टीम में कृषि मंत्रालय के अधिकारियों के साथ जर्मनी की GIZ संस्था के डायरेक्टर और टेक्निकल विशेषज्ञ भी शामिल रहे। गुरुकुल में पहुंचने पर व्यवस्थापक रामनिवास आर्य और विख्यात कृषि वैज्ञानिक पद्मश्री डॉ. हरिओम ने गर्मजोशी से सभी अतिथियों का स्वागत किया।

इस दल में शामिल योगिराज ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 2022 में पीएम नरेन्द्र मोदी और जर्मन चांसलर के बीच एक समझौता हुआ था जिसके तहत भारत में कृषि एवं ग्रामीण विकास को लेकर जर्मनी सरकार भारत को सहयोग देगी। इस समझौते को लेकर ग्रामीण विकास मंत्रालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और नॉबोर्ड के साथ मिलकर जर्मनी की GIZ संस्था Support for Agroecological Transformation Processes in INDA (SuATI) कार्य कर रही है जिससे दोनों देशों में कृषि एवं ग्रामीण विकास को लेकर सूचनाओं का आदान-प्रदान हो और विकास की नई इबारत लिखी जाए।

इसी (SuATI) प्रोजेक्ट के तहत कृषि मंत्रालय के अति. सचिव चरणजीत सिंह और GIZ संस्था के डायरेक्टर राजीव अहल 16 सदस्यीय दल के साथ गुरुकुल में पहुंचे। उनके साथ जयराम किली, उते रैकमन, प्यॉमेर वेरा जर्मन अधिकारियों के अलावा अनमोल चौहान, वैभव शर्मा, आशीर्वाद दास, दीपक चामोला, शुभी परवेज, पारूल थापा, किम अरोड़ा, दिव्या शर्मा, सुहासिनी और हर्षा आदि टैक्निकल टीम के सदस्य शामिल रहे।

गुरुकुल फार्म पर इस दल का 'मल्चिंग' और 'सह-फसलें' प्रोजेक्ट पर विशेष फोकस रहा। मल्चिंग किस प्रकार से खेती में सहायक है और इसका सही तरीका क्या है, इस बारे डॉ. हरिओम ने विस्तृत जानकारी दी। साथ ही उन्होंने फार्म पर सेब, आम और लीची के बाग और फलों की गुणवत्ता के बारे में बताया। डॉ. विजय ने टीम सदस्यों को जीवामृत और घनजीवामृत को बनाने की पूरी प्रक्रिया और उसे खेतों में किस प्रकार और कब-कब डाला जाए इसका पूरा विवरण दिया। (SuATI) प्रोजेक्ट के सभी सदस्यों ने गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्यश्री देवव्रत के प्राकृतिक कृषि मॉडल की खुले दिल से प्रशंसा की।

रामनिवास आर्य ने गुरुकुल की गोशाला में मौजूद देशी गाय के दुग्ध-क्षमता और उनके रखरखाव के बारे में अतिथियों को जानकारी दी। गुरुकुल के फार्म और गोशाला की विजिट के उपरान्त सभी अतिथि काफी खुश नजर आए और उन्होंने यहां पर हो रही प्राकृतिक खेती की प्रशंसा की साथ ही कृषि मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा कि गुरुकुल के फार्म की तर्ज पर कर्नाटक, मध्य प्रदेश और आसाम में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जाएगा ताकि देश के अधिक से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़कर उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकें।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। **CBSE** पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2015** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1560 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यहां **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है –

देवयान विद्यालय भवन : अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त बहुमंजिला विद्यालय भवन 'देवयान' का निर्माण हाल ही में किया गया है। लगभग 30 करोड़ की लागत से बनी ऐसी भव्य इमारत सम्भवत: हरियाणा में अन्यत्र किसी विद्यालय में नहीं है। **आचार्यश्री** ने विगत दिनों इस भव्य इमारत का लोकार्पण किया है।

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला भव्य प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

प्राकृतिक कृषि फार्म एवं अनुसंधान केन्द्र : गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा महामहिम राज्यपाल **आचार्य श्री देवव्रत जी** के मार्गदर्शन में 180 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक कृषि की जाती है। साथ ही यहां पर प्राकृतिक खेती को लेकर नये प्रयोग भी किये जा रहे हैं जिससे खेती को किसानों के लिए फायदेमंद बनाया जाए। गुरुकुल परिसर में ही प्राकृतिक खेती की ट्रेनिंग हेतु भव्य प्रशिक्षण केन्द्र है।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 100 से अधिक कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 335 गायें हैं जो प्रतिदिन 1500 लीटर दूध देती हैं।

घुड़सवारी: इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

निशानेबाजी प्रशिक्षण : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस व स्कॉउट विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है। स्कॉउट विंग भी यहां स्थापित है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारें: गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में हैं।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जहां गम्भीर रोगों के उपचार के साथ **'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस'** कोर्स भी कराया जाता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग है। वेद प्रचारक विभिन्न क्षेत्रों में घूमकर जहां लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक करते हैं, वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र : लोगों को जहरमुक्त एवं रसायनमुक्त फल, सब्जियाँ व अन्न उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा **'प्राकृतिक उत्पाद बिक्री केन्द्र'** खोला गया है जहाँ पर गुरुकुल के सभी उत्पाद उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।

इनके अतिरिक्त **स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला** भी है। **आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्रिका के माध्यम से वैदिक धर्म एवं भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

आर्य वीरांगनाओं के सम्मान समारोह की झलकियाँ

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244

Postel Reg. No. HR/ KKR/ 181/ 2024-2026

स्वामी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री राजकुमार गर्ग द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड निकट डी. एन. कॉलेज कुरुक्षेत्र से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक : राजकुमार गर्ग

मूल्य : 150 रुपये (वार्षिक)

प्रतिष्ठा में

) य आर्य जी, मंत्री
र्य सभा दिल्ली, 15
नु नई दिल्ली 110001